॥ श्री गणेशाय नमः ॥

जन्मपत्रिका

Ramesh
31/8/1993 1:10 PM
Warangal Hyderabad, India

निर्मित

TemplePurohit
Destination for all your spiritual needs

सामान्य कुंडली विवरण

सामान्य विवरण

जन्म दिनांक	31/8/1993
जन्म समय	13:10
जन्म स्थान	Warangal Hyderabad, India
अक्षांश	17 N 58
देशांतर	79 E 35
समय क्षेत्र	5.5
अयनांश	
सूर्योदय	5:57:5
सूर्यास्त	18:26:36

घात चक्र

महीना	अश्विन
तिथि	1,6,11
दिन	शुक्रवार
नक्षत्र	रेवती
योग	व्यतिपात
करण	गर
प्रहर	1
चंद्र	9

पंचांग विवरण

तिथि	पूर्णिमा
योग	अतिगण
नक्षत्र	धनिष्ठा
करण	विष्टि

ज्योतिषीय विवरण

वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
योनि	सिंह
गण	राक्षस
नाड़ी	मध्य
जन्म राशि	कुम्भ
राशि स्वामी	शनि
नक्षत्र	धनिष्ठा
नक्षत्र स्वामी	मंगल
चरण	4
युञ्जा	प्रभाग
तत्त्व	वायु
नामाक्षर	गे
पाया	ताम्ब्र
लग्न	वृश्चिक
लग्न स्वामी	मंगल

ग्रह स्थिति

ग्रह	वक्री	जन्म राशि	अंश	राशि स्वामी	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	भाव
सूर्य	--	सिंह	14:08:39	सूर्य	पूर्व फाल्गुनी	शुक्र	दसवां
चन्द्र	--	कुम्भ	05:23:49	शनि	धनिष्ठा	मंगल	चौथा
मंगल	--	कन्या	18:31:45	बुध	हस्त	चन्द्र	ग्यारहवाँ
बुध	--	सिंह	16:03:26	सूर्य	पूर्व फाल्गुनी	शुक्र	दसवां
गुरु	--	कन्या	21:13:58	बुध	हस्त	चन्द्र	ग्यारहवाँ
शुक्र	--	कर्क	10:34:46	चन्द्र	पुष्य	शनि	नौवां
शनि	हाँ	कुम्भ	02:20:04	शनि	धनिष्ठा	मंगल	चौथा
राहु	हाँ	वृश्चिक	13:49:13	मंगल	अनुराधा	शनि	पहला
केतु	हाँ	वृष	13:49:13	शुक्र	रोहिणी	चन्द्र	सातवाँ
लग्न	--	वृश्चिक	23:34:18	मंगल	ज्येष्ठा	बुध	पहला

सूर्य
सिंह
पूर्व फाल्गुनी
लाभप्रद

चन्द्र
कुम्भ
धनिष्ठा
योगकारक

मंगल
कन्या
हस्त
सम

बुध
सिंह
पूर्व फाल्गुनी
हानिप्रद

गुरु
कन्या
हस्त
लाभप्रद

शुक्र
कर्क
पुष्य
हानिप्रद

शनि
कुम्भ
धनिष्ठा
सम

राहु
वृश्चिक
अनुराधा
--

केतु
वृष
रोहिणी
--

लग्न कुंडली

		के	
चं श			शु
			सू बु
	रा Ascendant		मं गु

व्यक्ति के जन्म के समय आकाश में पूर्वी क्षितिज जो राशि उदित होती है, उसे ही उसके लग्न की संज्ञा दी जाती है। जन्म कुण्डली में 12 भाव होते है। इन 12 भावों में से प्रथम भाव को लग्न कहा जाता है। कुण्डली में अन्य सभी भावों की तुलना में लग्न को सबसे अधिक महत्व पूर्ण माना जाता है। लग्न भाव बालक के स्वभाव, रुचि, विशेषताओ और चरित्र के गुणों को प्रकट करता है।

		के	
चं श Ascendant			शु
			सू बु
	रा		मं गु

चंद्र कुंडली

लग्न कुंडली के बाद जिस राशि में चंद्रमा होता है उसे लग्न मानकर एक और कुंडली का निर्माण होता है जो चन्द्र कुंडली कहलाती है। चंद्र कुंडली का भी फलित ज्योतिष में लग्न कुंडली जितना ही महत्त्व है। लग्न शरीर, तो चंद्र मन का कारक है और वे एक दूसरे के पूरक हैं।

		के	मं
Ascendant			गु
			सू बु
	चं रा	शु श	

नवमांश कुंडली

नवांश कुण्डली को नौ भागों में बांटा जाता है, जिसके आधार पर जन्म कुण्डली का विवेचन होता है। नवांश कुण्डली में यदि ग्रह अच्छी स्थिति या उच्च के हों तो वर्गोत्तम की स्थित उत्पन्न होती है और व्यक्ति शारीरिक व आत्मिक रुप से स्वस्थ हो शुभ दायक स्थिति को पाता है।

भाव सन्धि

लग्न - 23:34:18   दशम भाव मध्य - 29:47:51

भाव	जन्म राशि	भाव मध्य	जन्म राशि	भाव संधि
1	वृश्चिक	23:34:18	धनु	09:36:33
2	धनु	25:38:49	मकर	11:41:04
3	मकर	27:43:20	कुम्भ	13:45:35
4	कुम्भ	29:47:51	मीन	13:45:35
5	मीन	27:43:20	मेष	11:41:04
6	मेष	25:38:49	वृष	09:36:33
7	वृष	23:34:18	मिथुन	09:36:33
8	मिथुन	25:38:49	कर्क	11:41:04
9	कर्क	27:43:20	सिंह	13:45:35
10	सिंह	29:47:51	कन्या	13:45:35
11	कन्या	27:43:20	तुला	11:41:04
12	तुला	25:38:49	वृश्चिक	09:36:33

चलित कुंडली

		के	शु
चं श			सू बु
	रा Ascendant		मं गु

लग्न कुंडली का शोधन चलित कुंडली है, अंतर सिर्फ इतना है कि लग्न कुंडली यह दर्शाती है कि जन्म के समय क्या लग्न है और सभी ग्रह किस राशि में विचरण कर रहे हैं और चलित से यह स्पष्ट होता है कि जन्म समय किस भाव में कौन सी राशि का प्रभाव है और किस भाव पर कौन सा ग्रह प्रभाव डाल रहा है।

वर्ग कुंडली

सूर्य कुंडली

		के	
चं श			शु
			सू बु Ascendant
	रा		मं गु

शरीर, स्वास्थ्य, रचना

होरा कुंडली

Cancer	Leo
ASC	
बु	चं
श	श
के	गु
रा	सू
	मं

वित्त , धन -सम्पदा, समृद्धि

द्रेष्काण कुंडली

रा		गु	
चं श			Ascendant
मं			
सू बु	शु		के

भाई बहन

चतुर्थांश कुंडली

मं गु			
चं बु श र			
			के Ascendant
	सू	शु	

भाग्य

पंचमांश कुंडली

		रा	चं श Ascendant
सू बु			
			मं गु शु
	के		

आध्यात्मिकता

सप्तमांश कुंडली

चं शु			
श के			मं गु
			रा
	सू बु	Ascendant	

सन्तान

अष्टमांश कुंडली

	शु		
			मं गु
सू चं बु श रा के Ascendant			

आयु

दशमांश कुंडली

चं		के	शु
श Ascendant			
बु			
सू गु	मं रा		

व्यवसाय, जीवनयापन

द्वादशांश कुंडली

	चं मं रा	गु	
बु श			
सू			Ascendant
	शु	के	

माता-पिता, पैतृक सुख

templepurohit.com

वर्ग कुंडली

षोडशांश कुंडली

सू रा के	बु		
			Ascendant
	गु	चं	मं शु श

सुख, दुख, वाहन

विशमांश कुंडली

चं Ascendant			
श			मं
	शु	बु गु	सू रा के

आध्यात्मिक प्रगति एवं पूजा पाठ

चतुर्विशांश कुंडली

शु			रा के
			सू
Ascendant			बु
चं	गु		मं श

शैक्षणिक उपलब्धि, शिक्षा

भांष कुंडली

	सू		बु
चं गु			के
रा			
श	मं	शु Ascendant	

शारीरिक शक्ति, सहनशक्ति

त्रिषमांष कुंडली

मं रा के	श		
चं			
गु Ascendant			
सू बु			शु

बुराई, विपत्तियां

खवेदांश कुंडली

	रा के	Ascendant	
गु			श
बु			
शु	चं	सू मं	

शुभ और अशुभ प्रभाव

अक्षवेदांश कुंडली

मं	चं रा के	सू	
			गु शु Ascendant
			बु
	श		

जातक का चरित्र और आचरण

षष्ट्यांश कुंडली

गु	बु शु		श
रा			
			के
सू चं		मं Ascendant	

सामान्य खुशियाँ

पंचधा मैत्री चक्र

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	--	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	--	सम	मित्र	सम	सम	सम
मंगल	मित्र	मित्र	--	शत्रु	मित्र	सम	सम
बुध	मित्र	शत्रु	सम	--	सम	मित्र	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	--	शत्रु	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	--	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	--

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	--	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
चंद्र	शत्रु	--	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	शत्रु	--	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
बुध	शत्रु	शत्रु	मित्र	--	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	--	मित्र	शत्रु
शुक्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	--	शत्रु
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	--

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	--	सम	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	अतिशत्रु
चंद्र	सम	--	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु
मंगल	अतिमित्र	सम	--	सम	सम	मित्र	शत्रु
बुध	सम	अतिशत्रु	मित्र	--	मित्र	अतिमित्र	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	सम	सम	सम	--	सम	शत्रु
शुक्र	सम	अतिशत्रु	मित्र	अतिमित्र	मित्र	--	सम
शनि	अतिशत्रु	अतिशत्रु	अतिशत्रु	सम	शत्रु	सम	--

कृष्णमूर्ति पद्धति ग्रह स्थिति

ग्रह	वक्री	जन्म राशि	अंश	राशि स्वामी	भाव
सूर्य	--	सिंह	134:08:39	सूर्य	10
चन्द्र	--	कुम्भ	305:23:49	शनि	4
मंगल	--	कन्या	168:31:45	बुध	11
बुध	--	सिंह	136:03:26	सूर्य	10
गुरु	--	कन्या	171:13:58	बुध	11
शुक्र	--	कर्क	100:34:46	चन्द्र	9
शनि	हाँ	कुम्भ	302:20:04	शनि	4
राहु	हाँ	वृश्चिक	223:49:14	मंगल	1
केतु	हाँ	वृष	43:49:14	शुक्र	7
लग्न	--	वृश्चिक	233:34:18	मंगल	1

ग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	चरण	सब	सब-सब
सूर्य	पूर्व फाल्गुनी	शुक्र	1	शुक्र	राहु
चन्द्र	धनिष्ठा	मंगल	4	सूर्य	बुध
मंगल	हस्त	चन्द्र	3	बुध	सूर्य
बुध	पूर्व फाल्गुनी	शुक्र	1	सूर्य	बुध
गुरु	हस्त	चन्द्र	4	शुक्र	मंगल
शुक्र	पुष्य	शनि	3	सूर्य	गुरु
शनि	धनिष्ठा	मंगल	3	केतु	गुरु
राहु	अनुराधा	शनि	4	राहु	बुध
केतु	रोहिणी	चन्द्र	2	राहु	मंगल
लग्न	ज्येष्ठा	बुध	3	मंगल	गुरु

कृष्णमूर्ति पद्धति भाव संधि और कुंडली

भाव	जन्म राशि	अंश	राशि स्वामी	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	सब	सब-सब
1	धनु	257:20:25	गुरु	पूर्व षाढ़ा	शुक्र	मंगल	मंगल
2	मकर	287:31:54	शनि	श्रावण	चन्द्र	शनि	गुरु
3	कुम्भ	320:02:47	शनि	पूर्व भाद्रपद	गुरु	गुरु	गुरु
4	मीन	353:33:57	गुरु	रेवती	बुध	मंगल	गुरु
5	मेष	24:52:17	मंगल	भरणी	शुक्र	बुध	चन्द्र
6	वृष	52:22:54	शुक्र	रोहिणी	चन्द्र	शुक्र	बुध
7	मिथुन	77:20:25	बुध	आर्द्रा	राहु	शुक्र	केतु
8	कर्क	107:31:54	चन्द्र	अश्लेषा	बुध	बुध	चन्द्र
9	सिंह	140:02:47	सूर्य	पूर्व फाल्गुनी	शुक्र	राहु	मंगल
10	कन्या	173:33:57	बुध	चित्रा	मंगल	मंगल	गुरु
11	तुला	204:52:17	शुक्र	विशाखा	गुरु	बुध	मंगल
12	वृश्चिक	232:22:54	मंगल	ज्येष्ठा	बुध	चन्द्र	राहु

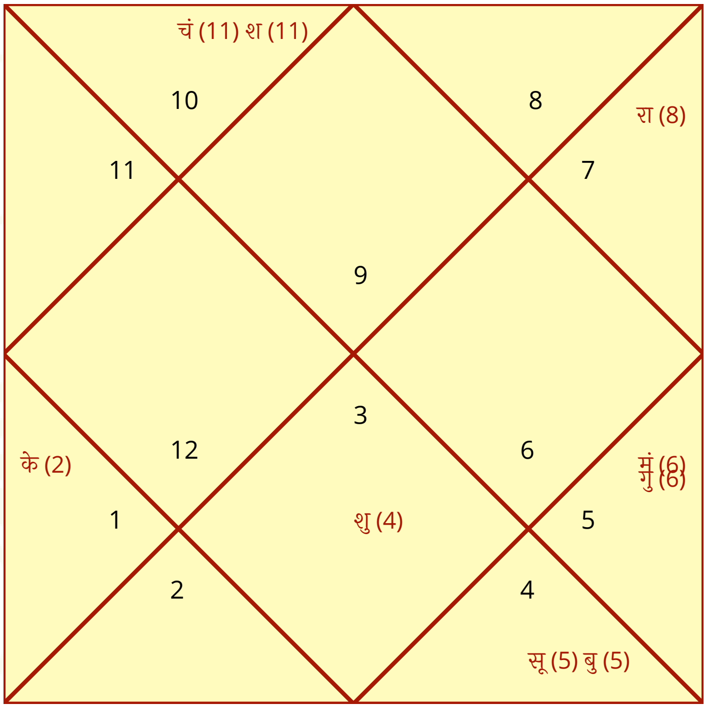

सूर्य भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	1	1	1	1	0	0	0	1	5
वृषभ	1	0	1	1	1	0	1	0	5
मिथुन	1	0	1	1	0	1	0	0	4
कर्क	0	1	1	1	1	0	0	0	4
सिंह	1	0	0	0	0	0	1	1	3
कन्या	1	0	1	0	0	0	1	1	4
तुला	0	0	1	1	0	0	1	1	4
वृश्चिक	1	1	0	0	0	0	1	0	3
धनु	0	1	1	1	0	1	1	0	5
मकर	0	0	0	1	1	1	0	1	4
कुंभ	1	0	0	0	1	0	1	1	4
मीन	1	0	1	0	0	0	1	0	3

अभिप्राय

पिता | व्यक्तिगत प्रभाव | राजकीय कृपा

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

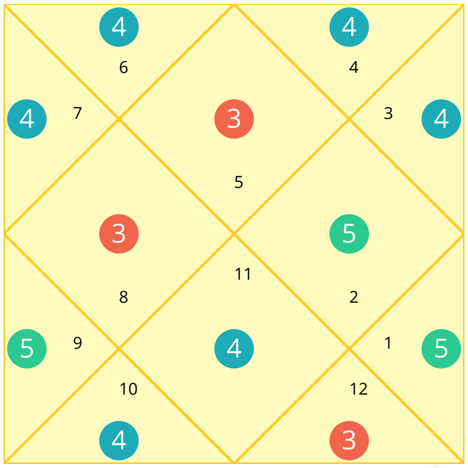

चंद्र भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	0	1	0	0	1	1	1	1	5
वृषभ	1	0	1	1	0	1	0	0	4
मिथुन	1	0	1	1	1	0	1	0	5
कर्क	0	1	1	0	1	0	1	0	4
सिंह	0	1	0	1	1	0	0	1	4
कन्या	0	0	0	0	1	1	0	1	3
तुला	1	0	1	1	0	1	0	0	4
वृश्चिक	0	1	1	1	0	1	0	0	4
धनु	0	1	0	1	1	0	1	0	4
मकर	1	0	1	0	0	1	0	1	4
कुंभ	1	1	1	1	0	0	0	0	4
मीन	1	0	0	1	1	1	0	0	4

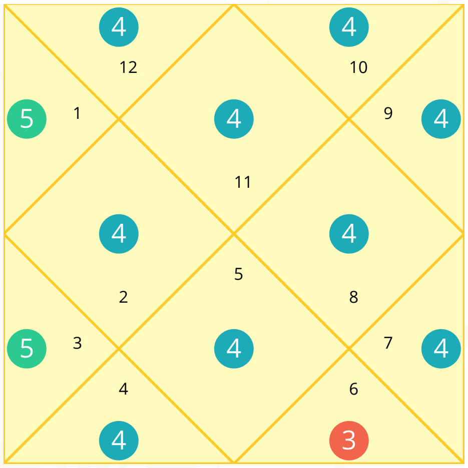

अभिप्राय

माता मन भावना बुद्धि

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

मंगल भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	0	1	1	0	0	0	0	1	3
वृषभ	1	0	0	0	0	1	1	0	3
मिथुन	1	0	1	1	1	1	0	0	5
कर्क	0	1	1	0	1	0	0	0	3
सिंह	0	0	0	0	1	0	1	1	3
कन्या	0	0	1	0	0	0	1	1	3
तुला	1	0	1	1	0	0	1	0	4
वृश्चिक	0	0	0	0	0	0	1	1	2
धनु	1	1	1	1	0	1	1	0	6
मकर	1	0	0	1	0	0	0	1	3
कुंभ	0	0	0	0	1	1	1	0	3
मीन	0	0	1	0	0	0	0	0	1

अभिप्राय

भाई-बहन | भूमि-संपत्ति | दुध?टना | विवाद

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

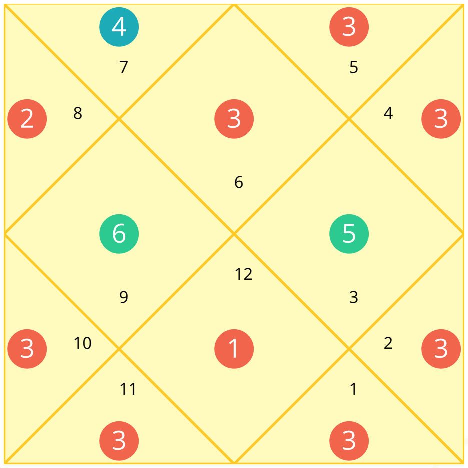

templepurohit.com

बुध भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	1	0	1	1	1	0	0	1	5
वृषभ	0	1	1	1	0	1	1	0	5
मिथुन	1	0	1	1	0	0	0	1	4
कर्क	1	1	1	1	1	1	0	0	6
सिंह	0	0	0	1	1	1	1	1	5
कन्या	0	1	1	0	0	1	1	1	5
तुला	0	0	1	1	0	1	1	0	4
वृश्चिक	0	1	0	0	0	1	1	1	4
धनु	1	1	1	1	0	0	1	1	6
मकर	1	0	0	1	0	0	0	0	2
कुंभ	0	0	0	0	1	1	1	1	4
मीन	0	1	1	0	0	1	1	0	4

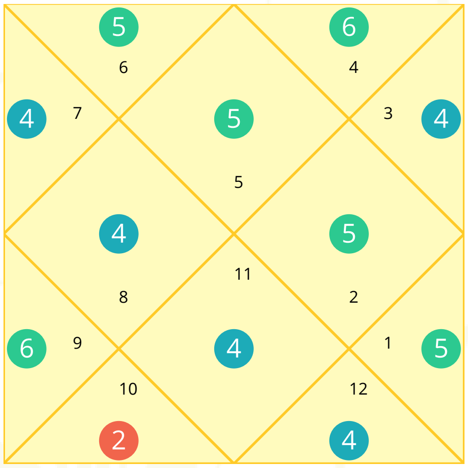

अभिप्राय

रिश्तेदार वक्तृता विवेकबुद्धि शिक्षा

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

गुरु भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	1	0	1	1	1	1	1	1	7
वृषभ	1	0	0	1	0	1	0	1	4
मिथुन	1	1	1	1	1	0	1	0	6
कर्क	0	0	1	0	1	0	1	1	4
सिंह	1	1	0	1	0	1	0	1	5
कन्या	1	0	1	1	1	0	0	1	5
तुला	1	1	1	0	1	0	0	0	4
वृश्चिक	1	0	0	1	1	1	0	1	5
धनु	0	1	1	1	1	1	0	1	6
मकर	0	0	0	1	0	0	1	0	2
कुंभ	1	0	0	0	0	0	0	1	2
मीन	1	1	1	0	1	1	0	1	6

अभिप्राय

संतान सम्मान धार्मिक कर्म सीखना भाग्य

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

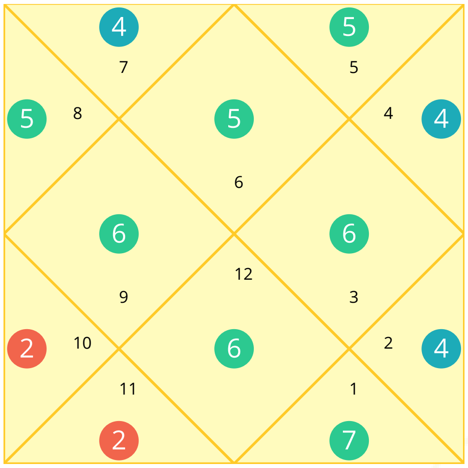

शुक्र भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	0	1	0	1	1	1	1	0	5
वृषभ	0	1	1	0	1	1	1	0	5
मिथुन	1	1	0	1	1	0	1	1	6
कर्क	1	0	1	0	1	1	0	1	5
सिंह	0	0	1	0	0	1	0	0	2
कन्या	0	1	0	0	0	1	1	1	4
तुला	0	1	0	1	0	1	1	0	4
वृश्चिक	0	0	1	0	0	1	1	1	4
धनु	0	1	0	1	0	0	1	1	4
मकर	0	1	1	1	1	0	0	1	5
कुंभ	0	1	1	0	0	1	0	1	4
मीन	1	1	0	0	0	1	0	1	4

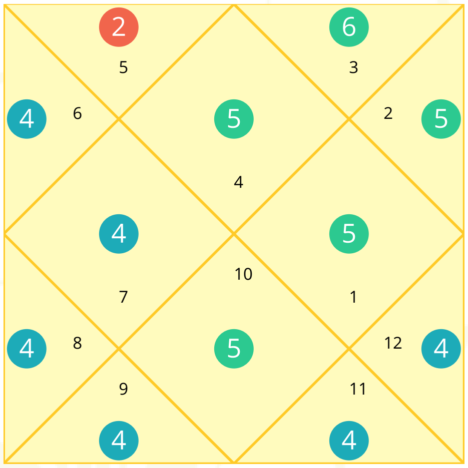

अभिप्राय

पति या पत्नी | विवाह | वाहन | आभूषण

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

templepurohit.com

शनि भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	0	1	0	1	0	0	1	1	4
वृषभ	1	0	0	1	0	1	0	0	3
मिथुन	1	0	1	1	0	1	1	0	5
कर्क	0	1	1	1	1	0	1	0	5
सिंह	1	0	1	0	1	0	0	1	4
कन्या	1	0	0	0	0	0	0	1	2
तुला	0	0	0	0	0	0	0	0	0
वृश्चिक	1	0	1	0	0	0	0	1	3
धनु	0	1	0	0	0	1	1	0	3
मकर	0	0	1	1	1	0	0	1	4
कुंभ	1	0	1	0	1	0	0	1	4
मीन	1	0	0	1	0	0	0	0	2

अभिप्राय

कर्मचारी
जीविका
कष्ट व शोक

सूचक

शुभ
अशुभ
मिश्रित

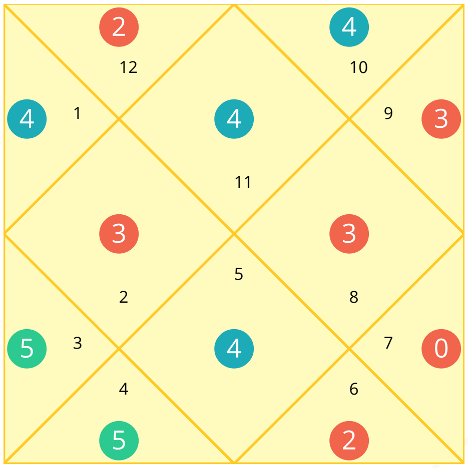

लग्न भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	0	1	0	0	0	0	1	1	3
वृषभ	1	0	0	1	1	0	1	0	4
मिथुन	1	0	1	1	1	0	0	0	4
कर्क	1	1	1	0	1	1	1	0	6
सिंह	0	0	0	1	0	1	0	1	3
कन्या	0	0	1	1	1	1	0	1	5
तुला	1	0	0	0	1	1	0	0	3
वृश्चिक	1	1	1	1	0	1	1	0	6
धनु	0	1	0	0	1	0	1	0	3
मकर	1	1	0	1	1	0	0	1	5
कुंभ	0	0	1	0	1	1	1	0	4
मीन	0	0	0	1	1	1	0	0	3

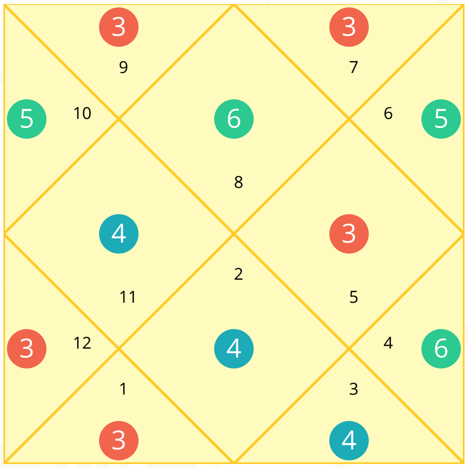

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

सर्वाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	5	5	3	5	7	5	4	0	34
वृषभ	5	4	3	5	4	5	3	0	29
मिथुन	4	5	5	4	6	6	5	0	35
कर्क	4	4	3	6	4	5	5	0	31
सिंह	3	4	3	5	5	2	4	0	26
कन्या	4	3	3	5	5	4	2	0	26
तुला	4	4	4	4	4	4	0	0	24
वृश्चिक	3	4	2	4	5	4	3	0	25
धनु	5	4	6	6	6	4	3	0	34
मकर	4	4	3	2	2	5	4	0	24
कुंभ	4	4	3	4	2	4	4	0	25
मीन	3	4	1	4	6	4	2	0	24

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

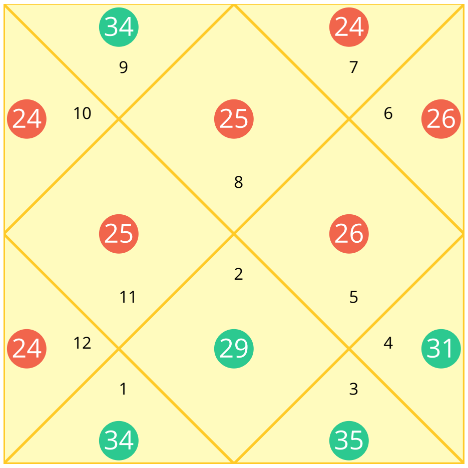

templepurohit.com

विम्शोत्तरी दशा - I

मंगल

02-05-1987 06:02
02-05-1994 00:02

मंगल	28-09-1987 09:29
राहु	15-10-1988 21:47
गुरु	21-09-1989 19:23
शनि	31-10-1990 15:02
बुध	28-10-1991 19:59
केतु	25-03-1992 23:26
शुक्र	26-05-1993 02:26
सूर्य	30-09-1993 22:32
चन्द्र	02-05-1994 00:02

राहु

02-05-1994 00:02
01-05-2012 12:02

राहु	12-01-1997 04:14
गुरु	07-06-1999 18:38
शनि	13-04-2002 17:44
बुध	31-10-2004 03:02
केतु	18-11-2005 15:20
शुक्र	18-11-2008 09:20
सूर्य	13-10-2009 02:44
चन्द्र	13-04-2011 23:44
मंगल	01-05-2012 12:02

गुरु

01-05-2012 12:02
01-05-2028 12:02

गुरु	19-06-2014 16:50
शनि	31-12-2016 00:02
बुध	07-04-2019 21:38
केतु	13-03-2020 19:14
शुक्र	12-11-2022 19:14
सूर्य	01-09-2023 00:02
चन्द्र	31-12-2024 00:02
मंगल	06-12-2025 21:38
राहु	01-05-2028 12:02

शनि

01-05-2028 12:02
02-05-2047 06:02

शनि	05-05-2031 07:05
बुध	12-01-2034 10:14
केतु	21-02-2035 05:53
शुक्र	22-04-2038 20:53
सूर्य	04-04-2039 20:35
चन्द्र	03-11-2040 04:05
मंगल	12-12-2041 23:44
राहु	18-10-2044 22:50
गुरु	02-05-2047 06:02

बुध

02-05-2047 06:02
01-05-2064 12:02

बुध	27-09-2049 21:29
केतु	25-09-2050 02:26
शुक्र	25-07-2053 23:26
सूर्य	01-06-2054 10:32
चन्द्र	31-10-2055 21:02
मंगल	28-10-2056 01:59
राहु	17-05-2059 11:17
गुरु	22-08-2061 08:53
शनि	01-05-2064 12:02

केतु

01-05-2064 12:02
02-05-2071 06:02

केतु	27-09-2064 15:29
शुक्र	27-11-2065 18:29
सूर्य	04-04-2066 14:35
चन्द्र	03-11-2066 16:05
मंगल	01-04-2067 19:32
राहु	19-04-2068 07:50
गुरु	26-03-2069 05:26
शनि	05-05-2070 01:05
बुध	02-05-2071 06:02

विम्शोत्तरी दशा - II

शुक्र	
02-05-2071 06:02	
02-05-2091 06:02	
शुक्र	31-08-2074 18:02
सूर्य	01-09-2075 00:02
चन्द्र	01-05-2077 18:02
मंगल	01-07-2078 21:02
राहु	01-07-2081 15:02
गुरु	01-03-2084 15:02
शनि	02-05-2087 06:02
बुध	02-03-2090 03:02
केतु	02-05-2091 06:02

सूर्य	
02-05-2091 06:02	
01-05-2097 18:02	
सूर्य	19-08-2091 19:50
चन्द्र	18-02-2092 10:50
मंगल	25-06-2092 06:56
राहु	20-05-2093 00:20
गुरु	08-03-2094 05:08
शनि	18-02-2095 04:50
बुध	25-12-2095 15:56
केतु	01-05-2096 12:02
शुक्र	01-05-2097 18:02

चन्द्र	
01-05-2097 18:02	
03-05-2107 06:02	
चन्द्र	02-03-2098 03:02
मंगल	01-10-2098 04:32
राहु	02-04-2100 01:32
गुरु	02-08-2101 01:32
शनि	03-03-2103 09:02
बुध	01-08-2104 19:32
केतु	02-03-2105 21:02
शुक्र	01-11-2106 15:02
सूर्य	03-05-2107 06:02

वर्त्तमान दशा

दशा नाम	ग्रह	आरम्भ तिथि	सम्पति तिथि
महादशा	गुरु	01-05-2012 12:02	01-05-2028 12:02
अंतर्दशा	बुध	31-12-2016 00:02	07-04-2019 21:38
प्रत्यंतर दशा	गुरु	09-08-2018 10:20	27-11-2018 19:37
सूक्ष्म दशा	केतु	26-09-2018 06:21	02-10-2018 16:54

*** ध्यान दें - सभी दिनांक दशा समाप्ति को दर्शाते हैं।**

योगिनी दशा - I

पिंगला (2 वर्ष)

9-11-1991 3:23
9-11-1993 3:23

पिंगला	19-12-1991 17:23
धान्य	18-2-1992 14:23
भ्रामरी	9-5-1992 18:23
भद्रिका	19-8-1992 5:23
उल्का	18-12-1992 23:23
सिद्धि	10-5-1993 0:23
संकटा	19-10-1993 8:23
मंगला	9-11-1993 3:23

धान्य (3 वर्ष)

9-11-1993 3:23
9-11-1996 3:23

धान्य	8-2-1994 10:53
भ्रामरी	10-6-1994 4:53
भद्रिका	9-11-1994 9:23
उल्का	11-5-1995 0:23
सिद्धि	10-12-1995 1:53
संकटा	9-8-1996 13:53
मंगला	9-9-1996 0:23
पिंगला	9-11-1996 3:23

भ्रामरी (4 वर्ष)

9-11-1996 3:23
9-11-2000 3:23

भ्रामरी	20-4-1997 11:23
भद्रिका	9-11-1997 9:23
उल्का	10-7-1998 21:23
सिद्धि	20-4-1999 23:23
संकटा	10-3-2000 15:23
मंगला	20-4-2000 5:23
पिंगला	10-7-2000 9:23
धान्य	9-11-2000 3:23

भद्रिका (5 वर्ष)

9-11-2000 3:23
9-11-2005 3:23

भद्रिका	20-7-2001 18:53
उल्का	21-5-2002 3:53
सिद्धि	11-5-2003 6:23
संकटा	20-6-2004 2:23
मंगला	9-8-2004 19:53
पिंगला	19-11-2004 6:53
धान्य	20-4-2005 11:23
भ्रामरी	9-11-2005 3:23

उल्का (6 वर्ष)

9-11-2005 3:23
9-11-2011 3:23

उल्का	9-11-2006 9:23
सिद्धि	9-1-2008 12:23
संकटा	10-5-2009 12:23
मंगला	10-7-2009 9:23
पिंगला	9-11-2009 3:23
धान्य	10-5-2010 18:23
भ्रामरी	9-1-2011 6:23
भद्रिका	9-11-2011 3:23

सिद्धि (7 वर्ष)

9-11-2011 3:23
9-11-2018 3:23

सिद्धि	20-3-2013 6:53
संकटा	9-10-2014 10:53
मंगला	19-12-2014 11:23
पिंगला	10-5-2015 12:23
धान्य	9-12-2015 13:53
भ्रामरी	18-9-2016 15:53
भद्रिका	8-9-2017 18:23
उल्का	9-11-2018 3:23

योगिनी दशा - II

संकटा (8 वर्ष)

9-11-2018 3:23
9-11-2026 3:23

संकटा	19-8-2020 11:23
मंगला	8-11-2020 15:23
पिंगला	19-4-2021 23:23
धान्य	19-12-2021 11:23
भ्रामरी	9-11-2022 3:23
भद्रिका	19-12-2023 23:23
उल्का	19-4-2025 23:23
सिद्धि	9-11-2026 3:23

मंगला (1 वर्ष)

9-11-2026 3:23
9-11-2027 3:23

मंगला	19-11-2026 6:53
पिंगला	9-12-2026 13:53
धान्य	9-1-2027 0:23
भ्रामरी	18-2-2027 14:23
भद्रिका	10-4-2027 7:53
उल्का	10-6-2027 4:53
सिद्धि	20-8-2027 5:23
संकटा	9-11-2027 3:23

पिंगला (2 वर्ष)

9-11-2027 3:23
9-11-2029 3:23

पिंगला	19-12-2027 17:23
धान्य	18-2-2028 14:23
भ्रामरी	9-5-2028 18:23
भद्रिका	19-8-2028 5:23
उल्का	18-12-2028 23:23
सिद्धि	10-5-2029 0:23
संकटा	19-10-2029 8:23
मंगला	9-11-2029 3:23

धान्य (3 वर्ष)

9-11-2029 3:23
9-11-2032 3:23

धान्य	8-2-2030 10:53
भ्रामरी	10-6-2030 4:53
भद्रिका	9-11-2030 9:23
उल्का	11-5-2031 0:23
सिद्धि	10-12-2031 1:53
संकटा	9-8-2032 13:53
मंगला	9-9-2032 0:23
पिंगला	9-11-2032 3:23

भ्रामरी (4 वर्ष)

9-11-2032 3:23
9-11-2036 3:23

भ्रामरी	20-4-2033 11:23
भद्रिका	9-11-2033 9:23
उल्का	10-7-2034 21:23
सिद्धि	20-4-2035 23:23
संकटा	10-3-2036 15:23
मंगला	20-4-2036 5:23
पिंगला	10-7-2036 9:23
धान्य	9-11-2036 3:23

भद्रिका (5 वर्ष)

9-11-2036 3:23
9-11-2041 3:23

भद्रिका	20-7-2037 18:53
उल्का	21-5-2038 3:53
सिद्धि	11-5-2039 6:23
संकटा	20-6-2040 2:23
मंगला	9-8-2040 19:53
पिंगला	19-11-2040 6:53
धान्य	20-4-2041 11:23
भ्रामरी	9-11-2041 3:23

योगिनी दशा - III

उल्का (6 वर्ष)

9-11-2041 3:23
9-11-2047 3:23

उल्का	9-11-2042 9:23
सिद्धि	9-1-2044 12:23
संकटा	10-5-2045 12:23
मंगला	10-7-2045 9:23
पिंगला	9-11-2045 3:23
धान्य	10-5-2046 18:23
भ्रामरी	9-1-2047 6:23
भद्रिका	9-11-2047 3:23

सिद्धि (7 वर्ष)

9-11-2047 3:23
9-11-2054 3:23

सिद्धि	20-3-2049 6:53
संकटा	9-10-2050 10:53
मंगला	19-12-2050 11:23
पिंगला	10-5-2051 12:23
धान्य	9-12-2051 13:53
भ्रामरी	18-9-2052 15:53
भद्रिका	8-9-2053 18:23
उल्का	9-11-2054 3:23

संकटा (8 वर्ष)

9-11-2054 3:23
9-11-2062 3:23

संकटा	19-8-2056 11:23
मंगला	8-11-2056 15:23
पिंगला	19-4-2057 23:23
धान्य	19-12-2057 11:23
भ्रामरी	9-11-2058 3:23
भद्रिका	19-12-2059 23:23
उल्का	19-4-2061 23:23
सिद्धि	9-11-2062 3:23

मंगला (1 वर्ष)

9-11-2062 3:23
9-11-2063 3:23

मंगला	19-11-2062 6:53
पिंगला	9-12-2062 13:53
धान्य	9-1-2063 0:23
भ्रामरी	18-2-2063 14:23
भद्रिका	10-4-2063 7:53
उल्का	10-6-2063 4:53
सिद्धि	20-8-2063 5:23
संकटा	9-11-2063 3:23

*** ध्यान दें - सभी दिनांक दशा समाप्ति को दर्शाते हैं।**

चर दशा

वृश्चिक (10 वर्ष)

31-8-1993
31-8-2003

वृष	31-1-2035
मिथुन	1-7-2035
कर्क	1-12-2035
सिंह	1-5-2036
कन्या	1-10-2036
तुला	1-3-2037
वृश्चिक	1-8-2037
धनु	1-1-2038
मकर	1-6-2038
कुम्भ	1-11-2038
मीन	1-4-2039
मेष	1-9-2039

तुला (9 वर्ष)

31-8-2003
31-8-2012

वृष	31-1-1994
मिथुन	1-7-1994
कर्क	1-12-1994
सिंह	1-5-1995
कन्या	1-10-1995
तुला	1-3-1996
वृश्चिक	1-8-1996
धनु	1-1-1997
मकर	1-6-1997
कुम्भ	1-11-1997
मीन	1-4-1998
मेष	1-9-1998

कन्या (1 वर्ष)

31-8-2012
31-8-2013

वृष	31-1-1994
मिथुन	1-7-1994
कर्क	1-12-1994
सिंह	1-5-1995
कन्या	1-10-1995
तुला	1-3-1996
वृश्चिक	1-8-1996
धनु	1-1-1997
मकर	1-6-1997
कुम्भ	1-11-1997
मीन	1-4-1998
मेष	1-9-1998

सिंह (12 वर्ष)

31-8-2013
31-8-2025

वृष	31-1-1994
मिथुन	1-7-1994
कर्क	1-12-1994
सिंह	1-5-1995
कन्या	1-10-1995
तुला	1-3-1996
वृश्चिक	1-8-1996

कर्क (5 वर्ष)

31-8-2025
31-8-2030

वृष	31-1-1994
मिथुन	1-7-1994
कर्क	1-12-1994
सिंह	1-5-1995
कन्या	1-10-1995
तुला	1-3-1996
वृश्चिक	1-8-1996

मिथुन (2 वर्ष)

31-8-2030
31-8-2032

वृष	31-1-1994
मिथुन	1-7-1994
कर्क	1-12-1994
सिंह	1-5-1995
कन्या	1-10-1995
तुला	1-3-1996
वृश्चिक	1-8-1996

धनु	1-1-1997
मकर	1-6-1997
कुम्भ	1-11-1997
मीन	1-4-1998
मेष	1-9-1998

वृष (2 वर्ष)

31-8-2032
31-8-2034

वृष	31-1-1994
मिथुन	1-7-1994
कर्क	1-12-1994
सिंह	1-5-1995
कन्या	1-10-1995
तुला	1-3-1996
वृश्चिक	1-8-1996
धनु	1-1-1997
मकर	1-6-1997
कुम्भ	1-11-1997
मीन	1-4-1998
मेष	1-9-1998

कुम्भ (3 वर्ष)

31-8-2045
31-8-2048

वृष	31-1-1994
मिथुन	1-7-1994
कर्क	1-12-1994
सिंह	1-5-1995

धनु	1-1-1997
मकर	1-6-1997
कुम्भ	1-11-1997
मीन	1-4-1998
मेष	1-9-1998

मेष (5 वर्ष)

31-8-2034
31-8-2039

वृष	31-1-1994
मिथुन	1-7-1994
कर्क	1-12-1994
सिंह	1-5-1995
कन्या	1-10-1995
तुला	1-3-1996
वृश्चिक	1-8-1996
धनु	1-1-1997
मकर	1-6-1997
कुम्भ	1-11-1997
मीन	1-4-1998
मेष	1-9-1998

मकर (11 वर्ष)

31-8-2048
31-8-2059

वृष	31-1-1994
मिथुन	1-7-1994
कर्क	1-12-1994
सिंह	1-5-1995

धनु	1-1-1997
मकर	1-6-1997
कुम्भ	1-11-1997
मीन	1-4-1998
मेष	1-9-1998

मीन (6 वर्ष)

31-8-2039
31-8-2045

वृष	31-1-1994
मिथुन	1-7-1994
कर्क	1-12-1994
सिंह	1-5-1995
कन्या	1-10-1995
तुला	1-3-1996
वृश्चिक	1-8-1996
धनु	1-1-1997
मकर	1-6-1997
कुम्भ	1-11-1997
मीन	1-4-1998
मेष	1-9-1998

धनु (9 वर्ष)

31-8-2059
31-8-2068

वृष	31-1-1994
मिथुन	1-7-1994
कर्क	1-12-1994
सिंह	1-5-1995

कन्या	1-10-1995	कन्या	1-10-1995	कन्या	1-10-1995
तुला	1-3-1996	तुला	1-3-1996	तुला	1-3-1996
वृश्चिक	1-8-1996	वृश्चिक	1-8-1996	वृश्चिक	1-8-1996
धनु	1-1-1997	धनु	1-1-1997	धनु	1-1-1997
मकर	1-6-1997	मकर	1-6-1997	मकर	1-6-1997
कुम्भ	1-11-1997	कुम्भ	1-11-1997	कुम्भ	1-11-1997
मीन	1-4-1998	मीन	1-4-1998	मीन	1-4-1998
मेष	1-9-1998	मेष	1-9-1998	मेष	1-9-1998

*** ध्यान दें - सभी दिनांक दशा समाप्ति को दर्शाते हैं।**

कालसर्प दोष

जब किसी व्यक्ति की कुंडली में राहु और केतू ग्रहों के बीच अन्य सभी ग्रह आ जाते हैं तो कालसर्प दोष का निर्माण होता है। क्योकि कुंडली के एक भाव में राहु और दूसरे भाव में केतु के बैठे होने से अन्य सभी ग्रहों से आ रहे फल रुक जाते हैं। इन दोनों ग्रहों के बीच में सभी ग्रह फँस जाते हैं और यह जातक के लिए एक समस्या बन जाती है। इस दोष के कारण फिर काम में बाधा, नौकरी में रुकावट, शादी में देरी और धन संबंधित परेशानियाँ, उत्पन्न होने लगती हैं।

कालसर्प योग वाले सभी जातकों पर इस योग का समान प्रभाव नहीं पड़ता। किस भाव में कौन सी राशि अवस्थित है और उसमें कौन-कौन ग्रह कहां बैठे हैं और उनका बलाबल कितना है - इन सब बातों का भी संबंधित जातक पर भरपूर असर पड़ता है। इसलिए मात्र कालसर्प योग सुनकर भयभीत हो जाने की जरूरत नहीं बल्कि उसका ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उसके प्रभावों की विस्तृत जानकारी हासिल कर लेना ही बुद्धिमत्ता कही जायेगी। कालसर्प दोष कुंडली में ख़राब अवश्य माना जाता है किन्तु विधिवत तरह से यदि इसका उपाय किया जाए तो यही कालसर्प दोष सिद्ध योग भी बन सकता है।

अनन्त	कुलिक	वासुकी	शंखपाल
पद्म	महापद्म	तक्षक	कर्कोटक
शंखचूड़	घातक	विषधर	शेषनाग

आपके जन्मपत्रिका में कालसर्पदोष

!!

आपकी जन्मपत्रिका में कालसर्प दोष नहीं है।

कालसर्प नाम

नहीं

दिशा

--

templepurohit.com

कालसर्प दोष का प्रभाव

सामान्यतः काल सर्प दोष/योग जीवन के सभी पहलुओं में संघर्ष देता है, फिर चाहे वह स्वास्थ्य, धन, करियर, व्यवसाय, प्रेम, विवाह, संतान तथा जीवन से संबंधित कई अन्य मामलें हों । परन्तु, जातक की कुंडली में उपस्थित काल सर्प दोष/योग के सटीक प्रभाव को जानना अति आवश्यक है । क्या यह दोष/योग स्वास्थ्य, धन, कैरियर, व्यवसाय, प्रेम, विवाह, संतति या हमारे जीवन से संबंधित अन्य चीजों में बुरा प्रभाव और संघर्ष दे रहा है? यह आप कैसे जान सकते हैं ?

इसका निर्णय जन्म कुंडली के विभिन्न भावों में राहु तथा केतु की स्तिथि को जानकर हो सकता है । उद्धारणार्थ, यदि राहु लग्न में और केतु सप्तम भाव में स्तिथ हों तो व्यक्ति को स्वास्थ्य और धन में कठिनाइयों आ सकती हैं क्योंकि प्रथम भाव जातक की सेहत तथा जीवन संघर्ष का सूचक है । उसी प्रकार, यदि राहु द्वितीय भाव में हो तो व्यक्ति को उसी भाव से सम्बंधित मामलों जैसे पारिवारिक रिश्तों तथा धन प्राप्ति में संघर्ष और कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है । तो इस प्रकार, जन्म कुंडली के बारह भावों में बन रहे काल सर्प दोष/योग के प्रभावों के अंकन से बारह प्रकार के काल सर्प दोष/योग बनते हैं ।

कालसर्प दोष के उपाय

- कालसर्प दोष के निम्नलिखित उपाय हैं -

- कालसर्प दोष निवारण यंत्रा घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।

- हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

- गृह में मयूर (मोर) पंख रखें ।

- शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।

- विद्यार्थीजन सरस्वती जी के बीज मंत्रों का एक वर्ष तक जाप करें और विधिवत उपासना करें।

- राहु की दशा आने पर प्रतिदिन एक माला राहु मंत्रा का जाप करें और जब जाप की संख्या 18 हजार हो जाये तो राहु की मुख्य समिधा दुर्वा से पूर्णाहुति हवन कराएं और किसी गरीब को उड़द व नीले वस्त्रा का दान करें

- महामृत्युंजय मंत्रों का जाप प्रतिदिन 11 माला रोज करें, जब तक राहु केतु की दशा-अंर्तदशा रहे और हर शनिवार को श्री शनिदेव का तैलाभिषेक करें और मंगलवार को हनुमान जी को चौला चढ़ायें।

- शुभ मुहूर्त में सर्वतोभद्रमण्डल यंत्रा को पूजित कर धारण करें।

- श्रावणमास में 30 दिनों तक महादेव का अभिषेक करें।

- एक वर्ष तक गणपति अथर्वशीर्ष का नित्य पाठ करें।

- श्रावण के महीने में प्रतिदिन स्नानोपरांत 11 माला 'नम: शिवाय' मंत्रा का जप करने के उपरांत शिवजी को बेलपत्रा व गाय का दूध तथा गंगाजल

चढ़ाएं तथा सोमवार का व्रत करें।

मांगलिक दोष क्या होता है

जिस जातक की जन्म कुंडली, लग्न/चंद्र कुंडली आदि में मंगल ग्रह, लग्न से प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भावों में से कहीं भी स्थित हो, तो उसे मांगलिक कहते हैं।

कुण्डली में जब लग्न भाव, चतुर्थ भाव, सप्तम भाव, अष्टम भाव और द्वादश भाव में मंगल स्थित होता है तब कुण्डली में मंगल दोष माना जाता है। सप्तम भाव से हम दाम्पत्य जीवन का विचार करते हैं। अष्टम भाव से दाम्पत्य जीवन के मांगलीक सुख को देखा जाता है। मंगल लग्न में स्थित होने से सप्तम भाव और अष्टम भाव दोनों भावों को दृष्टि देता है। चतुर्थ भाव में मंगल के स्थित होने से सप्तम भाव पर मंगल की चतुर्थ पूर्ण दृष्टि पड़ती है। द्वादश भाव में यदि मंगल स्थित है तब अष्टम दृष्टि से सप्तम भाव को देखता है।

मूल रूप से मंगल की प्रकृति के अनुसार ऐसा ग्रह योग हानिकारक प्रभाव दिखाता है, लेकिन वैदिक पूजा-प्रक्रिया के द्वारा इसकी भीषणता को नियंत्रित कर सकते है। मंगल ग्रह की पूजा के द्वारा मंगल देव को प्रसन्न किया जाता है, तथा मंगल द्वारा जनित विनाशकारी प्रभावों, सर्वारिष्ट को शांत व नियंत्रित कर सकारात्मक प्रभावों में वृद्धि की जा सकती है।

लग्ने व्यये सुखे वापि सप्तमे वा अष्टमे कुजे |
शुभ दृग् योग हीने च पतिं हन्ति न संशयम् ||

मांगलिक विश्लेषण

कुल मांगलिक प्रतिशत	20.25%

मांगलिक फल

कुंडली में मांगलिक दोष है परन्तु मांगलिक दोष का प्रभाव बहुत कम होने से किसी हानि की अपेक्षा नहीं है । कुछ साधारण उपायो की मदद से इसे और कम किया जा सकता है।

मांगलिक विश्लेषण - II

भाव के आधार पर

राहु आपके कुंडली में लग्न भाव में है।

शनि चतुर्थ भाव में आपके कुंडली में स्थित है।

केतु आपके कुंडली में सप्तम भाव में है।

दृष्टि के आधार पर

सप्तम भाव राहु से दृष्ट है।

आपकी कुंडली में लग्न भाव को शनि देख रहा है।

आपकी कुंडली में लग्न भाव को केतु देख रहा है।

मंगल , आपके कुंडली के पंचम भाव को देख रहा है।

राहु , आपके कुंडली के पंचम भाव को देख रहा है।

मंगल की दृष्टि आपके कुडंली के द्वितीय भाव पर पड़ रही है।

आपके कुंडली का चतुर्थ भाव सूर्य से दृष्ट है।

मांगलिक दोष के उपाय

- चांदी की चौकोर डिब्बी में शहद भरकर हनुमान मंदिर या किसी निर्जन वन, स्थान में रखने से मंगल दोष शांत होता है |
- मंगलवार को सुन्दरकाण्ड एवं बालकाण्ड का पाठ करना लाभकारी होता है |
- बंदरों व कुत्तों को गुड व आटे से बनी मीठी रोटी खिलाएं |
- मंगल चन्द्रिका स्तोत्र का पाठ करना भी लाभ देता है |
- माँ मंगला गौरी की आराधना से भी मंगल दोष दूर होता है |
- कार्तिकेय जी की पूजा से भी मंगल दोष के दुशप्रभाव में लाभ मिलता है |
- मंगलवार को बताशे व गुड की रेवड़ियाँ बहते जल में प्रवाहित करें |
- मंगली कन्यायें गौरी पूजन तथा श्रीमद्भागवत के 18 वें अध्याय के नवें श्लोक का जप अवश्य करें |

साढ़ेसाती क्या होता है

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार साढ़े साती तब बनती है जब शनि गोचर में जन्म चन्द्र से प्रथम, द्वितीय और द्वादश भाव से गुजरता है। शनि एक राशि से गुजरने में ढ़ाई वर्ष का समय लेता है इस तरह तीन राशियों से गुजरते हुए यह साढ़े सात वर्ष का समय लेता है जो साढ़े साती कही जाती है। सामान्य अर्थ में साढ़े साती का अर्थ हुआ सात वर्ष छ: मास।

साढ़े साती के समय व्यक्ति को कठिनाईयों एवं परेशानियों का सामना करना होता है परंतु इसमें घबराने वाली बात नहीं हैं। इसमे कठिनाई और मुश्किल हालत जरूर आते हैं परंतु इस दौरान व्यक्ति को कामयाबी भी मिलती है। बहुत से व्यक्ति साढ़े साती के प्रभाव से सफलता की उंचाईयों पर पहुंच जाते हैं। साढ़े साती व्यक्ति को कर्मशील बनाता है और उसे कर्म की ओर ले जाता है। हठी, अभिमानी और कठोर व्यक्तियों से यह काफी मेहनत करवाता है।

क्या आप साढ़ेसाती में है

नहीं, आप पर इस समय साढ़ेसाती का प्रभाव नहीं है।

विचार करने का दिनाकं	27-9-2018
शनि राशि	धनु
चंद्र राशि	कुम्भ
वक्री शनि ?	नहीं

साढ़ेसाती विश्लेषण - II

चंद्र राशि	शनि राशि	वक्री शनि	चरण प्रकार	दिनांक	संक्षिप्त विवरण
कुम्भ	कुम्भ	हाँ	उदय प्रारम्भ	15-10-1993	
कुम्भ	कुम्भ	--	शिखर प्रारम्भ	10-11-1993	
कुम्भ	मीन	--	अस्त प्रारम्भ	2-6-1995	
कुम्भ	मीन	हाँ	शिखर प्रारम्भ	10-8-1995	
कुम्भ	मीन	--	अस्त प्रारम्भ	16-2-1996	
कुम्भ	मेष	--	अस्त समाप्त	17-4-1998	
कुम्भ	मकर	--	उदय प्रारम्भ	24-1-2020	
कुम्भ	कुम्भ	--	शिखर प्रारम्भ	29-4-2022	
कुम्भ	कुम्भ	हाँ	उदय प्रारम्भ	12-7-2022	
कुम्भ	कुम्भ	--	शिखर प्रारम्भ	17-1-2023	
कुम्भ	मीन	--	अस्त प्रारम्भ	29-3-2025	
कुम्भ	मेष	--	अस्त समाप्त	3-6-2027	
कुम्भ	मेष	हाँ	अस्त प्रारम्भ	19-10-2027	
कुम्भ	मेष	हाँ	अस्त प्रारम्भ	20-10-2027	
कुम्भ	मेष	हाँ	अस्त प्रारम्भ	21-10-2027	
कुम्भ	मेष	--	अस्त समाप्त	23-2-2028	
कुम्भ	मकर	--	उदय प्रारम्भ	6-3-2049	
कुम्भ	मकर	हाँ	उदय समाप्त	9-7-2049	
कुम्भ	मकर	--	उदय प्रारम्भ	4-12-2049	
कुम्भ	कुम्भ	--	शिखर प्रारम्भ	25-2-2052	
कुम्भ	मीन	--	अस्त प्रारम्भ	14-5-2054	
कुम्भ	मीन	हाँ	शिखर प्रारम्भ	2-9-2054	
कुम्भ	मीन	--	अस्त प्रारम्भ	5-2-2055	
कुम्भ	मेष	--	अस्त समाप्त	7-4-2057	

चंद्र राशि	शनि राशि	वक्री शनि	चरण प्रकार	दिनांक	संक्षिप्त विवरण
कुम्भ	मकर	--	उदय प्रारम्भ	14-1-2079	
कुम्भ	मकर	--	उदय प्रारम्भ	15-1-2079	
कुम्भ	कुम्भ	--	शिखर प्रारम्भ	12-4-2081	
कुम्भ	कुम्भ	हाँ	उदय प्रारम्भ	3-8-2081	
कुम्भ	कुम्भ	--	शिखर प्रारम्भ	7-1-2082	
कुम्भ	मीन	--	अस्त प्रारम्भ	20-3-2084	
कुम्भ	मेष	--	अस्त समाप्त	21-5-2086	
कुम्भ	मेष	हाँ	अस्त प्रारम्भ	10-11-2086	
कुम्भ	मेष	--	अस्त समाप्त	8-2-2087	

साढ़े सती उपाय

- साढ़ेसाती के अनिष्ट प्रभावों को काम करने के उपाय निम्नलिखित है -

- साढ़े साती की परेशानी से बचने के लिए नियमित हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए।

- इस ग्रह दशा से बचने के लिए काले घोड़े की नाल की अंगूठी बनाकर उसे दाएं हाथ की मध्यमा उंगली में पहनना चाहिए।

- शनि देव को शनिवार के दिन सरसों का तेल और तांबा भेट करना चाहिए।

- किसी गरीब व्यक्ति को काले कंबल का दान करें।

- शिवलिंग पर काले तिल अर्पित करें और जल चढ़ाएं।

- हर मंगलवार और शनिवार ॐ रामदूताय नमः मंत्र का जप करें। मंत्र जप की संख्या कम से कम 108 करे।

- धार्मिक आचरण बनाए रखें और किसी का अनादर न करें।

- हर शनिवार को शनि के निमित्त तेल का दान करें। तेल दान करने से पहले तेल में अपना चेहरा देख लेना चाहिए। यह उपाय हर शनिवार किया जाना चाहिए।

- शनि बीज मंत्र - ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः प्रतिदिन 108 बार अवश्य करें

- शनि प्रकोप से मुक्ति के लिए सुंदर काण्ड का नियमित पाठ अवश्य करें।

- रोटी में तेल लगाकर कुत्ते या कौए को खिलाएं।

रत्न उपाय विचार

वैदिक ज्योतिष के अनुसार ग्रहों से सूक्ष्म ऊर्जाओं का उत्सर्जन होता है, जिनका हमारी जन्म कुंडली में ग्रहों की स्तिथि के अनुसार, हमारे जीवन पर प्रतिवर्ती हितकारी अथवा अनिष्टकारी प्रभाव पड़ते हैं । प्रत्येक ग्रह का अपना एक अनूठा तत्सम्बन्धित ज्योतिषीय रत्न होता है जो उसी ग्रह के अनुरूप ब्रह्मांडीय वर्ण-ऊर्जा का प्रसार करता है । रत्न सकारात्मक किरणों के प्रतिबिंब या नकारात्मक किरणों के अवशोषण द्वारा अपना कार्य करते हैं । ये रत्न केवल सकारात्मक स्पंदनों को ही शरीर में प्रवेश करने देते हैं; इस कारण उपयुक्त रत्न पहनाने से उसके धारण कर्ता पर सम्बंधित ग्रह के लाभदायक प्रभाव को बढ़ाया जा सकता है ।

जीवन रत्न

मूंगा

लग्न, शरीर और शरीर से संबंधित सभी बातों का - जैसे स्वास्थ्य, दीर्घायु, नाम, प्रतिष्ठा, जीवन-उद्देश्य आदि का प्रतीक होता है। संक्षेप में, इस में पूरे जीवन का सार समाया है । इसलिए लग्न के स्वामी अर्थात लग्नेश से संबंधित रत्न को जीवन रत्न कहा जाता है । इस रत्न के गुणों तथा शक्तियों का पूरा लाभ उठाने के लिए इसे आजीवन पहना जा सकता है और पहनना भी चाहिए ।

कारक रत्न

पुखराज

जन्म कुंडली का पंचम भाव भी एक शुभ भाव है। पांचवा भाव बुद्धि, उच्च शिक्षा, संतान, अप्रत्याशित धन-प्राप्ति आदि का द्योतक है। इस भाव को 'पूर्व पुण्य कर्मों' का अर्थात पिछले जन्मों के अच्छे कर्मों का स्थान भी माना जाता है । इसी कारण इसे शुभ भाव कहते हैं । पंचम भाव के स्वामी से सम्बंधित रत्न को कारक रत्न कहा जाता है।

भाग्य रत्न

मोती

जन्म-कुंडली के नवम भाव को भाग्य या प्रारब्ध का स्थान कहा जाता है । यह भाव भाग्य, सफलता, ज्ञान, गुणदोष और उपलब्धियों आदि का द्योतक है । यह भाव व्यक्ति द्वारा पिछले जन्मों में किए गए अच्छे कर्मों के कारण प्राप्त होने वाले फल स्वरूप आनंद की ओर संकेत करता है । नवम भाव के स्वामी से सम्बंधित रत्न को भाग्य रत्न कहते हैं । इस रत्न को धारण करने से भाग्य में वृद्धि होती है ।

templepurohit.com

जीवन रत्न - मूंगा

विकल्प	लाल सुलेमानी	दिन	मंगलवार
उंगली	तर्जनी	अधिदेवता	मंगल
भार	6 - 10.25 कैरेट	धातु	स्वर्ण

विवरण

लाल मूंगा का स्वामी ग्रह मंगल है । लाल मूंगा व्यक्ति को साहसी बनाता है और उसकी अपने दुश्मनों को पछाड़ने में सहायता करता है । लाल मूंगा दुष्ट आत्माओं, जादू-टोना और बुरे स्वप्नों से बचाता है ।

भार व धातु

लाल मूंगा का वजन ६ कैरेट से अधिक होना चाहिए । इसे सोने और तांबे के मिश्रण से बनी अंगूठी में जड़ा जाना चाहिए । अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके ।

पहनने का समय

लाल मूंगा रत्न चंद्रमास के शुक्ल पक्ष के किसी भी मंगलवार को सूर्योदय के एक घंटे बाद धारण किया जा सकता है ।

मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें । लाल मूंगा धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें

ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः

प्राण प्रतिष्ठा

लाल मूंगा की अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें ।

उंगली

मंत्र जाप के बाद, लाल मूंगे की अंगूठी को दाहिने हाथ की अनामिका (रिंग फिंगर) में धारण करें ।

विकल्प

लाल मूंगा के स्थान पर संग मुंगी (संग-सितारा), कार्नेलियन और रेड जास्पर (सूर्यकांत मणि) जैसे विभिन्न विकल्प रत्न भी उपयोग में लाये जा सकते हैं ।

सावधानी

ध्यान रहें कि लाल मूंगे को पन्ना, हीरा, नीलम, गोमेद, लहसुनिया और उनके विकल्प रत्नों के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

कारक रत्न - पुखराज

विकल्प	टोपाज	दिन	गुरुवार
उंगली	तर्जनी	अधिदेवता	गुरु
भार	4 - 5.25 कैरेट	धातु	स्वर्ण

विवरण

पुखराज रत्न का स्वामी ग्रह बृहस्पति (गुरु) है । शुद्ध पुखराज दोषरहित , चमकदार, दीप्तिमान, स्पर्श करने में चिकना और उत्तम वर्ण का होता हैं । पुखराज धारण करने से अच्छे स्वास्थ्य, ज्ञान, संपत्ति, दीर्घायु, नाम, सम्मान और यश की प्राप्ति होती है । यह बुरी आत्माओं के कुप्रभाव से भी रक्षा करता है ।

भार व धातु

पुखराज का वजन ३ कैरेट से अधिक होना चाहिए; परंतु ६, ११ अथवा १५ कैरेट का न हो इस बात का ध्यान रखें । इसे सोने की अंगूठी में जड़ा जाना चाहिए । अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके ।

पहनने का समय

पुखराज रत्न को चंद्रमास के शुक्ल पक्ष के किसी भी गुरुवार की सुबह धारण किया जा सकता है ।

मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें । पुखराज धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः

प्राण प्रतिष्ठा

पुखराज की अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें ।

उंगली

मंत्र जाप के बाद, पुखराज को दाहिने हाथ की अनामिका (रिंग फिंगर) में धारण करें ।

विकल्प

पुखराज के स्थान पर पीला मोती, पीला जिक्रोन, पीली तूरमली, टोपाज़ और सिट्रीन (क्वाट्र्ज टोपाज़) जैसे विभिन्न विकल्प रत्न भी उपयोग में लाये जा सकते हैं ।

सावधानी

ध्यान रहें कि पुखराज को हीरे, नीलम, गोमेद और लहसुनिया के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

भाग्य रत्न - मोती

विकल्प	चंद्रमणि	दिन	सोमवार
उंगली	अनामिका या कनिष्ठा	अधिदेवता	चंद्रमा
भार	5 - 7.25 कैरेट	धातु	चांदी

विवरण

मोती रत्न का स्वामी ग्रह चंद्र है। मोती धारण करने से धन, प्रसिद्धि और जीवन-शक्ति की प्राप्ति होती है। मोती धारण करने वाला व्यक्ति मेधावी होता है और दीर्घ जीवन जीता है।

भार व धातु

वजन में २, ४, ६ या ११ कैरेट का दोषरहित मोती पहनना चाहिए। इसे चांदी की अंगूठी में जड़ा जाना चाहिए। अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके।

पहनने का समय

मोती को शुक्ल पक्ष के किसी भी सोमवार को सूर्योदय के बाद धारण किया जा सकता है।

मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें। मोती धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें

ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः

प्राण प्रतिष्ठा

अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें।

उंगली

मंत्र जाप के बाद, मोती को दाहिने हाथ की अनामिका (रिंग फिंगर) अथवा कनिष्ठा अंगुली में धारण किया जा सकता है।

विकल्प

मोती के स्थान पर चन्द्रकान्त मणि या सफ़ेद नीलम जैसे विकल्प रत्न भी उपयोग में लाये जा सकते हैं।

सावधानी

ध्यान रहें कि मोती को हीरा, नीलम, पन्ना, लहसुनिया और उनके विकल्प रत्नों के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

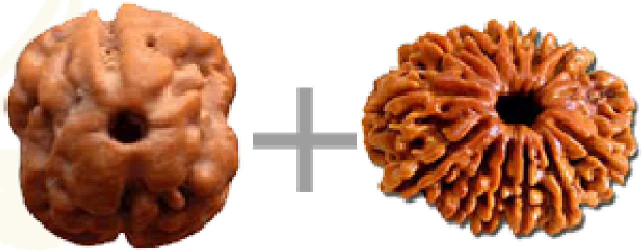

दो + तेरह मुखी रुद्राक्ष

आपको दो और तेरह मुखी रुद्राक्ष के संयोजन को धारण करने की सलाह दी जाती है।

.

दो मुखी रुद्राक्ष का स्वामी ग्रह चंद्रमा है। यह चंद्रमा के दुष्प्रभाव और बायीं आंख, गुर्दा, आंतों की बीमारियों को नियंत्रित करता है। यह मन को स्थिर करने में मदद करता है, और व्यक्ति को उद्देश्यपूर्ण बनाता है और व्यक्ति को दूसरा कार्य शुरु करने से पहले, पहले कार्य को पूरा करने में मदद करता है।

शुभाशुभ अंक

7	4	9
भाग्यांक	मूलांक	नामांक

आपका नाम	Ramesh
जन्म दिनांक	31-8-1993
मूलांक	4
मूलांक स्वामी	राहु
मित्र अंक	6,1,8
सम अंक	2,7,9
शत्रु अंक	3,5
शुभ दिन	रविवार, सोमवार, शनिवार
शुभ रत्न	गोमेद
शुभ उपरत्न	काला हकीक
शुभ देवता	गणेश
शुभ धातु	सीसा
शुभ रंग	काला
शुभ मंत्र	|| ओम रंग राहवे नमः ||

आपके बारे में

.

आपका मूलांक चार है। इसका स्वामी भारतीय मतानुसार राहु एवं पाश्चात्य मतानुसार हर्षल को माना गया है। मूलांक चार के प्रभाववश आप अपने जीवन में सहसा एवं आश्चर्यजनक प्रगति प्राप्त करेंगे। आपके जीवन में कई असंभावित घटनायें भी घटेंगी। एकाध घटनायें ऐसी भी घटित होंगी जो कि आपका कैरियर बदल देंगी। आप एक संघर्षशील व्यक्ति के रूप में जाने जायेंगे। आपकी विचार धारा भी आम धारणा से प्रायः अलग होगी। जमाने से आप काफी आगे की सोच रखेंगे तथा अपना विरोध प्रकट करने की आदत के कारण आप अपने आलोचक स्वयं तैयार करेंगे। पुरानी प्रथाओं, रीतियों के विरोधी रहेंगे तथा उनमे सुधर करने की पूरी कोशिश करेंगे। आप अपने कार्यक्षेत्र में पुरानी प्रथाओं को नवीन रूप में ढालने की भी कोशिश करेंगे। अपने जीवन में आप धन संग्रह अधिक नहीं कर पायेंगे, लेकिन नाम, यश अधिक प्राप्त करेंगे। समाज में आमूल - चूल परिवर्तन देखना आपका स्वभाव रहेगा। यदि आप अपनी संघर्ष करने की प्रवृत्ति पर अंकुश रखकर सहनशील तथा सहिष्णु बन सकें और शत्रुता कम पैदा करेंगे तो अपने जीवन में अधिक सफलता अर्जित करेंगे। आपकी विचार धारा सुधार वाली होने से आप समाज में अच्छी ख्याति प्राप्त करेंगे। लेकिन यह ख्याति स्थिर नहीं रहेगी कभी तो उच्चता के शिखर पर रहेगी और कभी मन्द। अतः आपको निरन्तर कार्य में लगे रहना पड़ेगा और नये - नये परिवर्तन, अविष्कारों द्वारा अपना नाम रोशन करते रहना होगा। स्वास्थ्य आपका साधारणतः उत्तम रहेगा, लेकिन कभी - कभी अत्यधिक श्रम एवं मानसिक थकान के कारण सिरदर्द, गर्मी से उत्पन्न रोग, मानसिक तनाव आदि का सामना करना पड़ेगा।

शुभ व्रत समय

.

शनिवार को हर्षल अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। शनिवार को काले, नीले वस्त्र धारण कर इक्कावन या उन्नीस शनिवारों को व्रत करें। शरीर में तेल मालिश, तैल दान तथा पीपल के वृक्ष की पूजा करें। शनि मंत्र का यथाशक्ति रुद्राक्ष माला पर जप करें।

शुभ देवता

.

आप राहु ग्रह की उपासना करें अथवा गणेश भगवान की आराधना करें। भगवान गणेश के अठ्ठाईशाक्षरी मंत्र ' ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्व जनं मे वशमानय स्वाहा ' का नित्य जप करें। करें। प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा चतुर्थी के दिन व्रत करें एवं भगवान गणेश को मोदक भोग लगाएं। इस क्रिया को करने पर आप विभिन्न रोगों तथा समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि ऐसा संभव न हो सके तो भगवान गणेश के चित्र का ही नित्य प्रातः दर्शन कर लिया करें।

शुभ गायत्री मंत्र

.

आपके राहु के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु राहु के राहु के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा | राहु गायत्री मंत्र - ॐ शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात्।

शुभ ध्यान समय

.

प्रातः काल उठ कर आप राहु का ध्यान करें, मन में राहु की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात निम्न मंत्र का पाठ करें। अर्धकायं महावीर्य चन्द्रादित्यविमर्दनम्| सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् //

शुभ मंत्र

.

अशुभ राहु को अनुकूल बनाने हेतु राहु के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान एक सौ अस्सी माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे। ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः। जप संख्या 18000

आपके के लिए शुभ समय

.

हर्षल आपके लिए दिनांक 21 जून से 31 अगस्त तक, पाश्चात्य मतानुसार, सूर्य के कर्क एवं सिंह राशि में रहने पर तथा भारतीय मत से 16 जुलाई से 16 सितम्बर तक कर्क एवं सिंह राशि में सूर्य के रहने पर हर्षल की स्थिति प्रबल मानी गयी है। इस समय जल एवं अग्नि तत्व प्रबल रहते हैं, जो हर्षल या राहु के गुण हैं। अतः उपर्युक्त समय मूलांक 4 के लिये कोई भी नया या महत्वपूर्ण कार्य करने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगी।

शुभ वास्तु

.

आपको चाहिए कि यदि आप भवन, काम्प्लेक्स का चुनाव करते समय दिशा का चुनाव करें तो आपके लिए नैर्ऋत्य कोण दिशा अच्छी रहेगी। आपका शयन कक्ष नैर्ऋत्य दिशा में होने से रोजगार - व्यापार शुभ रहेगा तथा फर्नीचर आदि का रंग नीला, धूप - छांव, भूरा मिश्रित रंग रखेंगे तो आपके लिए अधिक हितकर रहेगा।

लग्न फल - वृश्चिक

स्वामी	मंगल
प्रतीक	बिच्छू
विशेषताएँ	जल तत्त्व, स्थिर, उत्तर
भाग्यशाली रत्न	मूंगा
व्रत का दिन	मंगलवार

देहं रूपं च ज्ञानं च वर्णं चैव बलाबलम् |
सुखं दुःखं स्वभावञ्च लग्नभावान्निरीक्षयेत ||

वृश्चिक राशि के व्यक्ति का स्वभाव अपनी बातों को छिपाकर रखने का होता है,वे गंभीर, रचनात्मक या विनाशक, संकोची, नैतिकतावादी अथवा निम्न आचरण करने वाले, समझने में मुश्किल,अनवरत, साहसी, विचारधारा में जिद्दी, स्वेछाचारी , रचनात्मक, आत्मनिर्भर, स्व-नियंत्रित (भावावेश की अवस्था को छोड़कर) और मौन रहने वाले होते हैं ।

आध्यात्मिक ज्योतिषी इसाबेल हिक्की के अनुसार, कोई अपरिपूर्ण आत्मा वृश्चिक राशि में पैदा नहीं होती है। यह एक उर्जावान और तेजस्वी राशि मानी जाती है। यह राशि एक रणभूमि का प्रतिनिधित्व करती है जहां उच्च और निम्न स्तर के अंतर्मन को निर्णायक युद्ध के लिए आना ही पड़ता है ।

> “ ये दोनों तरह के अंतर्मन अर्थात अच्छाई और बुराई एक साथ चलते हैं और अंत में बुराई मर जाती हैं और अंतरात्मा अच्छाई के रास्ते पर चलती है और उसका पालन करती है । इसमे शारीरिक, भावनात्मक, मानसिक और आध्यात्मिक स्तर सभी शामिल हैं।,आप बाहर से शांत दिखाई देते हैं, लेकिन आप अंदर से बेहद भावुक हो सकते हैं ।

कहावत भी है , 'धीर सो गंभीर' । आप शांत स्वभाव के हैं ,हमेशा दूसरों की नीयत के विषय में जानने को इच्छुक रहते है, लेकिन कभी भी अपने इरादे दूसरों नहीं बताते। आप ख़ुफ़िया कार्यों या खोजी कार्यों को करना पसंद करते है ।

आप सब कुछ जानकार ही रहते हैं,कि कैसे हुआ और क्यूँ हुआ । आप के अन्दर पर्याप्त महान दृढ़ संकल्प और शक्ति

है जिससे आप किसी भी विरोधी पर,यहाँ तक कि स्वयं पर भी विजय पा सकते हैं ।

आप को असंतोष, अधिकार की भावना और ईर्ष्या से उबरने की जरूरत है। आपके अन्दर आकर्षण और तन्मयता हैं, तंत्र-मन्त्र, मृत्यु, सेक्स या चिकित्सा में रुचि या उन्हे करने की क्षमता है। आप एक राक्षस या देवदूत हो सकते हैं ,एक बाज़ की तरह या चुभते बिच्छू की तरह भी हो सकते हैं।

> " मंगल और प्लूटो वृश्चिक राशि के स्वामी हैं अतः आपकी कुंडली में मंगल और प्लूटो महत्वपूर्ण होंगे।

ॐ

सीखने के लिए आध्यात्मिक सबक

क्षमा

सकारात्मक लक्षण

प्रभावशाली | प्रतिबद्ध | बुद्धिमान | कल्पनाशील

नकारात्मक लक्षण

ईर्षालु | निर्मम | असहयोगी | गोपनीय

आपकी कुंडली में ग्रहों का विश्लेषण

ज्योतिष के अनुसार सूर्य को सबसे शक्तिशाली ग्रह माना जाता है, यह जीवन का स्त्रोत है।सूर्य को स्वास्थ्य, जीवन शक्ति, ऊर्जा, शक्ति, पिता, सम्मान, प्रतिष्ठा, गौरव, प्रसिद्धि, साहस और व्यक्तिगत शक्ति काकारक कहा जाता है।

आपकी कुंडली में सूर्य ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि	अंश	नक्षत्र
सिंह	**14:08:39**	**पूर्व फाल्गुनी - 1**
स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
दसवां भाव	**दसवां भाव**	**नहीं / युवा**

सूर्य आपकी कुंडली मे लाभप्रद है

आपके जन्मपत्रिका में सूर्य दसवां भाव में एवं सिंह राशि में स्थित है।

आप किसी जीनियस से कम नहीं हैं. आप सफलता और शक्ति प्राप्त करने की अभिलाषा रखते हैं . आप एक राजा की तरह आलीशान जीवन जीते हैं . आप अपने उदाहरण के माध्यम से दूसरों को प्रेरित करने की क्षमता रखते है. आप में अपनी पहचान बनाने की तृष्णा है - चाहे वह यश, सत्ता, राजनीति, अधिकार या उत्तरदायित्व के माध्यम से हो . आप एक उत्कृष्ट निष्पादक एवं प्रबंधक हैं. आप प्रबंधकारिणी शक्तियों, सामाजिक भूमिका, राजकीय और एकतंत्र प्रशासकीय कार्यों के लिए सबसे उपयुक्त हैं. आप हमेशा सर्वोच्च पद पर कार्यरत होते हैं . आप अपने सभी प्रयासों और उपक्रमों में सफल रहते हैं.

> “ आप महत्वाकांक्षी, शक्तिशाली और बुद्धिमान व्यक्ति हैं.

आप दूसरों का अनुसरण नहीं करते, अपितु दुसरे आप का अनुगमन करते हैं.आप अच्छे स्वास्थ्य का आनंद लें पायेंगें . आपकी आर्थिक स्तिथि मजबूत रहेगी. विवाह अथवा व्यापारिक साझेदारी के माध्यम से संपत्ति हासिल होगी . आप को राज्य/सरकार की तरफ से लाभ और समर्थन प्राप्त होगा. सरकारी नौकरी में आप को उच्च पद प्राप्त हो सकता है . सेवकों और वाहनों का सुख मिलेगा . पिता या किसी वरिष्ठ व्यक्ति से सहयोग और समर्थन प्राप्त होगा .आपके

जीवन में मानसिक चिंताएं रहेंगीं .

कई बार आप को अपने निकट और प्रिय लोगों से दूर रहना पड़ सकता है . काम में डूबे रहने की प्रवृत्ति के कारण शादीशुदा/पारिवारिक जीवन में कठिनाईयां उत्पन्न हो सकती है. साझेदार, साथी या मित्र से अलग होने की वजह से आप ग्लानि महसूस करते हैं. आप आम तौर पर दूसरों का शक करते हैं. आप बहुत अहंकारी और घमंडी हो सकते है. माता का स्वस्थ्य निरंतर चिंता का कारण बना रहेगा . काले और नीले रंग के कपड़ों से दूर रहें . शराब और मांसाहार के सेवन पर संयम रखें .

सूर्य मंत्र	**॥ ॐ ह्रीं ह्रौं सूर्याय नमः ॥**

चंद्रमा में मन, शक्ति और भावनाओं को प्रभावित करने की क्षमता है। चंद्रमा पानी और प्राकृतिक शक्तियों से जुड़ा हुआ है,यह एक ढुलमुल ग्रह है जो परिवर्तनों से संबंधित है। चंद्रमा भावनाओं, कल्पना, माता, हृदय, स्मृति, नींद, यात्रा, इच्छा, बचपन, बुद्धि से सम्बंधित है। चंद्रमा व्यक्ति कीइच्छाओं और पसंद से सम्बंधित है।

आपकी कुंडली में चन्द्र ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि	अंश	नक्षत्र
कुम्भ	**05:23:49**	**धनिष्ठा - 4**
स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
नौवां भाव	**चौथा भाव**	**नहीं / बाल**

चन्द्र आपकी कुंडली मे योगकारक है

आपके जन्मपत्रिका में चन्द्र चौथा भाव में एवं कुम्भ राशि में स्थित है।

आप काफी भाग्यशाली हैं . प्रायः आपके विचार तार्किक और वैज्ञानिक होते हैं. आप का दिल एक बच्चे की तरह कोमल है. आप भीतर से बहुत अतिसंवेदनशील और मृदु हैं; जिस कारण आप को बेचैनी और मानसिक अस्थिरता का सामना करना पड़ सकता है .आप को अपने अतीत, अपनी विरासत और परिवार की परंपराओं से प्रबल लगाव है. घर और परिवारिक जीवन की भावनात्मक सुरक्षा आप के लिए बहुत महत्वपूर्ण है. आप को अपने वाहनों, भूमि और संपत्ति से गहरा जुड़ाव है. विवाह उपरांत धन, सौभाग्य और संपत्ति में बढ़त होगी .

> “ आप स्वभाव से धर्मार्थ और उपकारी हैं.

आप के माता-पिता और भाई-बहनों के साथ अच्छे और सौहार्दपूर्ण संबंध हैं. वैवाहिक जीवन भी अत्युत्तम रहेगा . आप पर आपकी माता का बहुत गहरा प्रभाव है . शैक्षणिक अध्यापन की तुलना में माँ द्वारा दिया गया ज्ञान ही आपके जीवन का मार्गदर्शक साबित होगा . आप अपने घर के माहौल में ही अपने

को सुरक्षित और आश्वासित महसूस करते हैं . आप हमेशा अपने घर से ही व्यवसाय करना पसंद करेंगें; जैसे कि नर्सिंग होम, बच्चों और नर्सरी स्कूल इत्यादि चलाना . व्यावसायिक और सामाजिक क्षेत्रों में आपको आदर और सम्मान मिलने की संभावना है; सरकार की ओर से भी पुरस्कार प्राप्त करने के संकेत हैं.

समुद्री व्यापार, मछली पालन, मोती और सीप के व्यापार, वस्तुओं के आयात और निर्यात जैसे कॅरिअर आप के लिए अनुकूल हैं . कपड़ा, जल अथवा तरल वस्तुओं से संबंधित व्यवसाय में लाभ देते हैं.जल आप के लिए प्रेरणा के एक स्त्रोत के रूप में कार्य करता है और ऊर्जा प्रदान करता है. अतएव आप नदी, समुद्र अथवा झील या झरने के पास बसना पसंद करते हैं .मेहमानों का स्वागत पानी के बजाय दूध से करें . माता तथा माता तुल्य महिलाओं की सेवा और आदर करें और उनका आशीर्वाद लें . किसी भी शुभ या नये काम को शुरू करने से पहले, दूध से भरा एक घड़ा या कलश घर में किसी भी स्थान पर स्थापित करें - लाभ होगा .

चंद्र मंत्र	**|| ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः ||**

ज्योतिष के अनुसार मंगल ग्रह हिम्मत और तानाशाही से सम्बंधित है। मंगल ग्रह को कार्य और विस्तार का ग्रह माना जाता है। मंगल, शक्ति, साहस, क्रोध, दुश्मन, हिंसा, छोटे भाई, बल, मांसपेशियों और वीरता से सम्बंधित है।

आपकी कुंडली में मंगल ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि **कन्या**	अंश **18:31:45**	नक्षत्र **हस्त - 3**
स्वामी **छठा ,पहला भाव**	भाव में **ग्यारहवाँ भाव**	अस्त/अवस्था **नहीं / कुमार**

मंगल आपकी कुंडली मे सम है

आपके जन्मपत्रिका में मंगल ग्यारहवाँ भाव में एवं कन्या राशि में स्थित है।

आप वस्तुतः साहसी और सशक्त हैं . आप प्रतिस्पर्धात्मक, महत्वाकांक्षी, लक्ष्य साधक और सफल व्यक्ति हैं . आप एक अच्छे आयोजक और प्रबंधक हैं . आप अपनी आकांक्षाओं और लक्ष्यों के प्रति बहुत दृढ़ संकल्पी हैं . अपने कार्य में आप सर्वोत्कृष्ट प्रयास करते हैं . आप का अपना एक स्वतंत्र दृष्टिकोण है. आपके कठोर रवैया के कारण आपको कई बार बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है . आपमें जीवन में विभिन्न अनुभवों से सीख लेने की क्षमता है. आप बढ़ती उम्र के साथ विशेषज्ञता प्राप्त करते जायेंगें .

> “ सामाजिक क्षेत्र में आप का मजबूत और प्रभावी रुतबा हैं .

आप अपनी कड़ी मेहनत से अपनी सभी आकांक्षाओं को पूरा करने में समर्थ हैं . आप साहस के साथ अपने प्रतिद्वंद्वियों को हरा सकते हैं .आप की कई तीव्र ख्वाहिशों और इच्छाओं है; आप सामाजिक नेतृत्व करने में सक्षम हैं. कई ऊर्जावान और व्यवसायिक दोस्तों के साथ आपके अनौपचारिक सम्बन्ध हैं . आपके दोस्त आपका फायदा भी उठा सकते हैं . सामूहिक गतिविधियों में सक्रियता से भाग लेना आप पसंद करते हैं . आप में कोई भी भेद गुप्त रखने के

जन्मजात गुण है. आप बहुत ज्ञानी और बुद्धिमान हैं.

आप वकील के पेशे के लिए उपयुक्त हैं . आप रक्षा विभाग, सैन्य विभाग, गुप्तचर विभाग आदि में भी प्रवेश कर सकते हैं . आप व्यापार करने के लिए उपयुक्त नहीं हैं.शादी के बाद ही आपका भाग्य उदित होगा . आप पत्नी बहुत अच्छे चरित्र महिला होगी . गर्भ धारण में समस्या आ सकती है; आप को चिकित्सा सहायता लेनी पड़ सकती है.अपने पुश्तैनी धनसंग्रह एवं संपत्ति को कभी न बेचें . किसी भी तरह का अवैध काम न करें अन्यथा आप पकड़ें जा सकते हैं और अनादर के सिवाय कुछ हाथ नहीं आएगा.

मंगल मंत्र	**|| ॐ हूं श्रीं भौमाय नमः ||**

♉ बुध बुद्धि और शिक्षा का ग्रह है, यह भाषण और तर्क से सम्बंधित है और इस प्रकार व्यक्ति के संचार कौशल पर इसका प्रभाव पड़ता है। बुध स्मृति, भाषण, राजनीति, व्यापार और व्यापार, मित्रों, मामा, चाचा, भतीजे, दत्तक पुत्र और तर्क से सम्बंधित है।

आपकी कुंडली में बुध ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि	अंश	नक्षत्र
सिंह	**16:03:26**	**पूर्व फाल्गुनी - 1**
स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
आठवाँ ,ग्यारहवाँ भाव	**दसवां भाव**	**हाँ / युवा**

बुध आपकी कुंडली मे हानिप्रद है

आपके जन्मपत्रिका में बुध दसवां भाव में एवं सिंह राशि में स्थित है।

भाषा और संचार आपके जुनूनी शौक हैं . आप अधिकार के साथ बात करते हैं और आप में संतुलित तथा व्यवहारिक वार्ता का कौशल है . कुछ नया और रोमांचक की तलाश में आप अक्सर करियर बदलते रहते हैं . आप ऐसे व्यवसायों की ओर खिंचे चले जाते हैं जहाँ आप को विश्लेषण और संगठन करने तथा स्वतंत्र रुप से बोलने के अवसर मिलें . आप अपने पेशे में वाणी तथा लेखन का भरपूर प्रयोग कर सकते हैं . अध्यापन के क्षेत्र में आप का भविष्य उज्जवल हो सकता है . आप में कई प्रतिभएँ विद्यमान हैं, जिस वजह से आप एक साथ कई कार्यों में संलग्न हो सकते हैं . दलाली, प्रोफेसरी, पत्रकारिता, वकालत, ज्योतिष, लेखांकन, विज्ञापन, इंजीनियरिंग आदि क्षेत्रों में आपको यश प्राप्त होगा. आप कंप्यूटर, संगीत वाद्ययंत्र, रेडियो, टेलीविजन, इलेक्ट्रॉनिक आइटम आदि के व्यापार में उत्कृष्ट सफलता प्राप्त कर सकते हैं.

> " आपकी मानसिक सतर्कता और निपुणता तथा नेतृत्व के गुण आप की मुख्य पूंजी हैं .

templepurohit.com

आपके व्यवसाय में निरंतर भ्रमण करते रहने की संभावना है . अपनी विस्तृत बुद्धि और कुशल संचार कौशल के बल पर अपने लिए निर्धारित किसी भी कैरियर में बहुत सफल होंगें . आप को जीवन में सम्मान, सत्ता, रुतबा, पद प्राप्त होंगें . आप साहसी, निर्मल मन और अच्छे आचरण वाले व्यक्ति हैं . आप कई विषयों की जानकारी रखते हैं . आप अपने मधुर स्वभाव और महान कार्यों के लिए लोकप्रियता हासिल करेंगे . आपके कई मित्र तथा समर्थक होंगें . आप को विरासत में पैतृक संपत्ति मिलने की संभावना है आप अपने स्वयं के प्रयासों से अच्छे घर का निर्माण कर पायेंगें .

आप वैवाहिक जीवन और मानसिक सुख का आनंद उठा पायेंगें . दमा, हर्निया, गुर्दे और पेट से संबंधित रोग आप को परेशान कर सकते हैं . हवाई और समुद्री यात्रा आप के लिए हानिकारक साबित हो सकती हैं . मांसाहार और शराब का सेवन न करें . धार्मिक स्थानों में चावल और दूध का दान दें . अपने घर को किराए पर मत दें . अपने घर के ईशान कोण (उत्तर पूर्वी कोने) में एक तुलसी का पौधा अवश्य लगाएं. .

बुध मंत्र	**॥ ॐ ऐं श्रीं श्रीं बुधाय नमः ॥**

बृहस्पति को मंत्रि ग्रह माना जाता है जो ज्ञान, खुशी और अच्छे भाग्य से संबंधित है। बृहस्पति धन, ज्ञान, गुरु, पति, पुत्र, नैतिक मूल्यों, शिक्षा, दादा दादी और शाही सम्मान का कारक है। यह धार्मिक धारणा, भक्ति और लोगो के विश्वास को दर्शाता करता है।

आपकी कुंडली में गुरु ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि	अंश	नक्षत्र
कन्या	**21:13:58**	**हस्त - 4**
स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
दूसरा ,पाँचवा भाव	**ग्यारहवाँ भाव**	**नहीं / कुमार**

गुरु आपकी कुंडली मे लाभप्रद है

आपके जन्मपत्रिका में गुरु ग्यारहवाँ भाव में एवं कन्या राशि में स्थित है।

आप परोपकारी दृष्टिकोण रखते हैं . आप जल्दबाजी में निर्णय नहीं ले लेतें . आप की वाणी में स्पष्टता है . आप को प्रकृति से प्रेम हैं और पहाड़, नदी के किनारे और प्राकृतिक झरनों के शांतिपूर्ण वातावरण आपको पसंद हैं . आप रहस्यमयी ज्ञान और योग-ध्यान में रुचि रखते हैं . आप विशेष रूप से लोगों को और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को बहुत महत्व देते हैं .आप में विशाल स्तर पर सामूहिक गतिविधियों को आयोजित और संगठित करने की प्राकृतिक क्षमता है - फिर चाहे वह राजनीतिक अभियान का प्रबंधन हो या किसी प्रदर्शन का संचालन .

> “ आप हमेशा एकाग्र, सतर्क और शांत रहते हैं .

ऐसे समूहों में काम कर के, जहां सद्भावना और अच्छा सहयोग मौजूद हो, आप को बड़ी सफलता हासिल होगी . आप तकनीकी क्षेत्र के लिए अधिक अनुकूल हैं . नई तकनीक, मशीनरी, अनुसंधान, वकालत और निवेश गतिविधियों के माध्यम से आप पैसे कमा सकते हैं. आप अच्छी सरकारी नौकरी भी

प्राप्त कर सकते हैं.सामाजिक जीवन आप के लिए बहुत मायने रखता है. आपकी समस्याओं अक्सर अन्य लोगों हल कर देते हैं जिस कारण आपकी जिंदगी और भी आसान हो जायेगी . सम्भवतः आप के बहुत सारे मित्र सुविज्ञ, आदर्शवादी और विदेशी होंगें जो आप के लिए लगभग कुछ भी करने को तैयार रहते हैं .

आपके अधिकतर दोस्त हैं और भी हो सकते हैं .पिता के सानिध्य में आपको जीवन की सभी सुख सुविधाएं प्राप्त होंगीं . आप को अपने परिवार से बहुत आत्मीयता है. आपकी पत्नी सुंदर होगी और घर के काम में निपुण होंगीं.आप संक्रामक रोगों, दाँत दर्द और टॉन्सिल से पीड़ित हो सकते हैं . उम्र के बढ़ने के साथ साथ आप को मांसपेशियों और पेट की समस्याएं हो सकती हैं. अपने ससुराल वालों के साथ साझेदारी में व्यापार न करें .

गुरु मंत्र	**॥ ॐ ह्रीं क्लीं हूं बृहस्पतये नमः ॥**

वीनस कामुक सुख और कामुक आवेगों से सम्बंधित है। चमक और जीवन शक्ति का ग्रह होने के नाते भौतिकवाद और मांस के आनंद को दर्शाता है। वीनस को यौन इच्छाओं (काम), कामेच्छा, पत्नी का महत्व का कारक माना जाता है। यह जुनून, विवाह, लक्जरी लेख, गहने, वाहन, आराम और सुंदरता से संबंधित है।

आपकी कुंडली में शुक्र ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि	अंश	नक्षत्र
कर्क	**10:34:46**	**पुष्य - 3**
स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
सातवाँ ,बारहवां भाव	**नौवां भाव**	**नहीं / वृद्ध**

शुक्र आपकी कुंडली मे हानिप्रद है

आपके जन्मपत्रिका में शुक्र नौवां भाव में एवं कर्क राशि में स्थित है।

आप का चेहरा स्नेहशील और मुस्कुराता हुआ है. आप विनम्र, नेकदिल और कई कलाओं के ज्ञाता हैं. आप स्वतंत्रता या असीमितता में विश्वास रखते हैं . आप को यात्रा करना बहुत पसंद है . आप अपने जन्म स्थल से दूर रहेंगें . आप अपने सभी व्यवहार में निष्पक्ष और विधिसम्मत होते हैं . धर्म, संस्कार, दर्शन, कानून और उच्च शिक्षा के प्रति आप के मन में प्रेम और आकर्षण हो सकता है . आप को फटे में टांग अड़ाने की आदत हैं; दूसरों को बिनमांगी मदद देने के चक्कर में कई बार आप खुद मुसीबत में फँस जाते हैं .

> “ आप कला और संगीत के पारखी हैं.

आप काफी जिद्दी और हठी हो सकते हैं .आप विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के लोगों को आकर्षित करते हैं . विभिन्न सांस्कृतिक समूहों केबीच सहमति और तालमेल बैठने की क्षमता आपमें हैं . विदेशी संस्कृतियों का सौंदर्य, कला और संगीत आपको आकर्षित करते हैं. आप साहसी साथी की ओर मोहित हो जाते

हैं . आप की अपने भावी जीवनसाथी से विदेशी भूमि पर मुलाकात हो सकती हैं. आप की पति/पत्नी आप से अलग पृष्ठभूमि और संस्कृति के हो सकते हैं. आप अपने ससुरालवालों के साथ लाभदायक और सौहार्दपूर्ण रिश्तों का आनंद ले पायेंगें .

आप किसी एक पद या स्तिथि में बंधें नहीं रह सकते हैं . इसलिए आप नौकरियां बदलते रहते हैं . आप को खेतीबाड़ी, धार्मिक अनुष्ठान, इत्र, घर की सजावट, गहने, रेशम के कपड़े और ऑटोमोबाइल के उत्पादन से संबंधित व्यवसायों से लाभ होगा. आप लोक व्यवहार में दक्ष हैं और एक अच्छे सलाहकार भी हैं . आप विशेष रुप से मनोविज्ञान, कानून और चिकित्सा जैसे मामलों में अनौपचारिक परामर्श दे सकते हैं . आप संचार या प्रकाशन में भी संलग्न हो सकते हैं.प्राय: आपका स्वस्थ अच्छा रहेगा; हाथ पैर तथा पेट सम्बन्धी शिकायत हो सकती हैं. घर की नींव में चांदी की डिब्बी में शहद भरकर दबा दें .

शुक्र मंत्र	**॥ ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः ॥**

शनि

शनि एक धीमी गति का ग्रह है। इसे न्याय, तर्क और विनाशकारी शक्तियों का ग्रह कहा जाता है। यह आपदाओं और मृत्यु से संबंधित है। शनि को एक शिक्षक के रूप में भी माना जाता है। शनि लंबी उम्र से सम्बंधित है। यह देरी, अवरोध, दु: ख, नुकसान, चोरी, बुढ़ापे, दु: ख, प्रतिकूलता और आजादी सेसम्बंधित है।

आपकी कुंडली में शनि ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि	अंश	नक्षत्र
कुम्भ	**02:20:04**	**धनिष्ठा - 3**
स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
तिसरा ,चौथा भाव	**चौथा भाव**	**नहीं / बाल**

शनि आपकी कुंडली मे सम है

आपके जन्मपत्रिका में शनि चौथा भाव में एवं कुम्भ राशि में स्थित है।

आप रूढ़िवादी हैं और पुराने, पारंपारिक तरीके और बातों में विश्वास रखते हैं. अज्ञात के भय से आप परिवर्तन पसंद नहीं करते हैं . आप कमजोर दिल के हैं और इसी कारण आप को कोई भी निर्णय लेने में कठिनाई होगी . आप शंकालु और वहमी हो सकते हैं . आप मानसिक रूप से पूरी तरह संतुष्ट नहीं रह पायेंगें .आपके परिवार को काफी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता हैं . अपनी दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आप को काफी परिश्रम करना होगा . सुरक्षा कारणों की खातिर आप संपत्ति जमा करना चाहते हैं . आप पर घर या पारिवारिक जीवन की कई जिम्मेदारियों हो सकती हैं .

> " आप माता-पिता के प्रति समर्पित हैं और आपका स्वभाव स्नेहशील हैं .

आप कुछ हद तक एक तानाशाह की तरह सख्त अनुशासन में विश्वास रखते हैं .अपना खुद का घर बनाना या खरीदना आपके लिए बहुत मुश्किल होगा; संभव हैं कि आप जीवन भर किराये के मकान में रहें . आपका विवाह या तो अल्पायु में या देर से होगा . पारिवारिक सुख और शांति के लिए आप को अपने

जीवन साथी के साथ समझौता करना पड़ सकता हैं .काम के मामलों में आप बहुत मेहनती, अनुशासित और संगठित हैं . कैरियर शुरू करने में देरी हो सकती है . आपका कैरियर घर और परिवार के मुद्दों से संबंधित होगा . आप अचल संपत्ति, निर्माण परियोजनाओं, घरेलू उत्पादों या घर से कोई काम करने में व्यस्त हो सकते हैं . जीवन का उत्तरार्ध अधिक लाभजनक हो सकता है .

अंतरस्थ चिंताएं अल्सर का कारण बन सकती हैं . हड्डियों और जोड़ों सम्बंधित व्याधियों का सामना करना पड़ सकता हैं . आप को गैस, अल्सर, पीलिया, खांसी, एक्जिमा जैसी समस्याएं हो सकती है . कर्क रोग के प्रति सावधान रहें . रात में दूध न पीयें . शराब से दूर रहें . ४८ साल की उम्र से पहले अपने नाम पर संपत्ति मत खरीदें . ससुराल वालों के साथ मिलकर व्यापर न करें .

शनि मंत्र	**|| ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः ||**

अजीब और अपरंपरागत ग्रह होने के कारण राहु भौतिकवाद से सम्बंधित है और कठोर वाणी, कमी और इच्छा से सम्बंधित है। राहु को ट्रान्सेंडैंटलिज्म का ग्रह कहा जाता है। यह विदेशी भूमि और विदेशी यात्रा से सम्बंधित है।

आपकी कुंडली में राहु ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि	अंश	नक्षत्र
वृश्चिक	**13:49:13**	**अनुराधा - 4**
स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
ग्यारहवाँ भाव	**पहला भाव**	**नहीं / युवा**

आपके जन्मपत्रिका में राहु पहला भाव में एवं वृश्चिक राशि में स्थित है।

आप का माथा चौड़ा है और चेहरा आनुपातिक रूप से सुडौल है. आप अपने व्यक्तित्व को अपने तरीके से परिभाषित करना पसंद करते हैं . आप में बहुत ज्यादा अधीरता और उत्सुकता हो सकती है - बिलकुल एक बच्चे जैसी . आप काफी साहसी भी हैं और किसी भी बात में पहल करने में संकोच नहीं करते . आप का दिमाग चंचल है . आप उच्च स्तर तक पहुचेंगें और काफी प्रतिष्ठा और धन प्राप्त कर पायेंगें . जीवन के प्रति आपका दृष्टिकोण असामान्य हैं . आप में प्रबल कल्पना शक्ति है और आप स्वभाव से बहुत चालाक हैं. हालांकि आप बुद्धिमान हैं, आप पढ़ाई में रुचि नहीं ले पातें . आप में अपने काम को अधूरा छोड़ने की प्रवृत्ति है .

> " आप अपनी ही पहचान से आसक्त हैं .

आप अक्सर क्रोधित हो जाते हैं . आप स्वभाव से आलसी हो सकते हैं . आप को कोई सलाह दे - यह बात आप को पसंद नहीं है . आप कहानियाँ बनाने या झूठ बोलने में माहिर हैं .आप को गपशप करना और दोस्तों के साथ घूमना बहुत पसंद है . वैवाहिक जीवन अधिक खुशहाल नहीं होगा . घरेलू झगड़े और वाद विवाद होते रहेंगें . आप के अपनी पत्नी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं . संतान प्राप्ति में समस्या हो सकती है .

आप को भौतिक संपत्ति से बहुत ज्यादा लगाव है . आप एक बहुत अच्छे अभिनेता, जादूगर, मार्केटिंग प्रबंधक बन सकते हैं; अपितु सरकारी विभागों या राज्य से आपको कोई लाभ नहीं होगा . आप जुए या सट्टेबाज़ी से अच्छा धन कमा सकते हैं .आप की सिर दर्द और शरीर के ऊपरी भाग के रोगों से ग्रस्त होने की

संभावना है . आप लकवा, दिल की बीमारी, कमजोर दृष्टि, कमजोर हड्डियों और दांतों की समस्या से पीड़ित हो सकते हैं . दक्षिण मुखी घर में न रहें . अपने भाइयों और बहनों के साथ अच्छे संबंध बनाए रखें. घर में टूटे बर्तन न रखें. उन्हें फेंक दें .

राहु मंत्र	**॥ ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः ॥**

केतु मोक्ष, पागलपन का ग्रह है। यह आध्यात्मिकता से सम्बंधित है। केतु रहस्यमय, भ्रामक, गुप्त और पेचीदा ग्रह है। केतु दर्द, रहस्य, गुप्त विज्ञान, उदासीनता, दर्शन, अलगाव और कारावास का प्रतीक है।

आपकी कुंडली में केतु ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि	अंश	नक्षत्र
वृष	**13:49:13**	**रोहिणी - 2**
स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
पाँचवा भाव	**सातवाँ भाव**	**नहीं / युवा**

आपके जन्मपत्रिका में केतु सातवाँ भाव में एवं वृष राशि में स्थित है।

विवाह में बाधा हो सकती है . विवाह विलंब हो सकता है या फिर वैवाहिक जीवन में परेशानियां हो सकती हैं .आप एक आकर्षक और आशावादी व्यक्ति हैं . आप दूसरों को प्रोत्साहित करते हैं . आप का स्वभाव संतुलित और शांत है . आप जोशीले और रचनात्मक तरीके से काम करते हैं . समाज में आप का बहुत प्रभावी और शक्तिशाली रुतबा है .अपने परिवार की उत्तरदायित्व के प्रति आप चिंतित रहते हैं और अपनी जिम्मेदारियां पूरी निष्ठां के साथ निभाते हैं . आप को विवाह करने में समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है; संभवतः शादी देर से होगी और वैवाहिक जीवन में बाधाओं आ सकती हैं.

> “ जोड़ीदारों के बीच आस्था और विश्वास की कमी हो सकती है .

आप के दो विवाह भी हो सकते हैं . आप को कई बार लम्बे समय के लिए अपने पति या पत्नी से अलग या दूर रहना पड़ सकता है . आप का जीवनसाथी सुंदर और सक्षम होगा . आप के अन्य महिलाओं के साथ संबंध हो सकते हैं और परिणाम स्वरुप आप को अपमान का सामना करना पड़ सकता है . आपकी संतान आप के लिए भाग्यशाली साबित होगी .आप नौकरी और व्यापार दोनों के लिए उपयुक्त हैं. कंप्यूटर, स्टेशनरी, टेलीविजन, महिलाओं संबंधित आइटम, शिक्षण, पर्यटन, परामर्श, आदि आपके लिए अच्छे कैरियर विकल्प हैं. आप प्रतिभाशाली विवाह सलाहकार और मध्यस्थ वार्ताकार बन सकते हैं.आप हर्निया या आंतों में संक्रमण से ग्रस्त हो सकते हैं .

आपके पेट का क्षेत्र भी कमजोर है . आप को मूत्र और प्रजनन अंगों से सम्बंधित रोग हो सकते हैं . आप गुप्त रोगों से पीड़ित हो सकते हैं . मीठी वाणी का

प्रयोग करें . झूठा वादा और घमंड कभी न करें . अपमानजनक और अभद्र भाषा का प्रयोग न करें . कभी छल और कपट न करें . गहरे पानी और ऊंचाइयों से दूर रहें .

केतु मंत्र	**|| ॐ ह्रीं ऐं केतवे नमः||**

We are an organization that strives to bring back the goodness of our rich culture and tradition. We enable you to get connected to your beloved guru and be immersed in a spiritual bliss. We provide information on temples across the world, panchangam and hindu festival details, mantras, shlokas and stotras, puja vidhi, purohit booking services, pilgrim packages and more.

Temple Purohit
https://www.templepurohit.com
purohit@templepurohit.com